بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक
बदर
क़ादियान
Weekly Badar Qadian
HINDI

अल्लाह तआला का आदेश

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا ہَلۡ اَدُلُّکُمۡ عَلٰی تِجَارَۃٍ تُنۡجِیۡکُمۡ مِّنۡ عَذَابٍ اَلِیۡمٍ ۔ تُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰہِ وَرَسُوۡلِہٖ وَ
تُجَاہِدُوۡنَ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ بِاَمۡوَالِکُمۡ وَاَنۡفُسِکُمۡ ؕ ذٰلِکُمۡ خَیۡرٌ لَّکُمۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ

(الصّف: 11،12)

अनुवाद: ऐ ईमान लाने वालों! क्या मैं तुम्हें ऐसी व्यापार की बात बताऊँ जो तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब से बचा ले? वह यह है कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जानों के साथ संघर्ष (जिहाद) करो। यही तुम्हारे लिए सबसे बेहतर है, अगर तुम जानते हो।

संपादक : शेख मुजाहिद अहमद | उप संपादक : सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद   वर्ष- 11 | अंक -36   20 रबीउल अव्वल 1448 हिज्री क़मरी, 03 तबूक 1405 हिज्री शम्सी, 03 सितम्बर 2026 ई.

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

मुजाहिद वह है जो अपने नफ़्स (स्वयं की बुरी इच्छाओं) से संघर्ष करे।

فَضَالَۃَ بْنَ عُبَیْدٍ یُحَدِّثُ، عَنْ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ أَنَّہٗ قَالَ: "کُلُّ مَیِّتٍ یُخْتَمُ عَلٰی عَمَلِہٖ إِلَّا الَّذِیْ مَاتَ مُرَابِطًا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ، فَإِنَّہٗ یُنَمّٰی لَہٗ عَمَلُہٗ إِلٰی یَوْمِ الْقِیَامَۃِ، وَیَأْمَنُ مِنْ فِتْنَۃِ الْقَبْرِ"، وَسَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ: "اَلْمُجَاہِدُ مَنْ جَاہَدَ نَفْسَہٗ۔ [سنن ترمذی/ کتاب فضائل الجہاد عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم/ حدیث: ۱۶۲۱]

हज़रत फ़ज़ालह बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"हर मृत व्यक्ति के कर्मों का सिलसिला बंद कर दिया जाता है, सिवाय उस व्यक्ति के जो अल्लाह की राह में सीमा की रक्षा करते हुए मृत्यु पाए। उसके कर्मों का सवाब क़यामत के दिन तक बढ़ाया जाता रहेगा और वह क़ब्र की परीक्षा (फ़ितना) से सुरक्षित रहेगा।" मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह भी फ़रमाते हुए सुना: "मुजाहिद वह है जो अपने नफ़्स (अपनी बुरी इच्छाओं और वासनाओं) के विरुद्ध संघर्ष करे।"

عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ أَنَّہٗ رَجَعَ مِنْ بَعْضِ غَزَوَاتِہٖ فَقَالَ رَجَعْنَا مِنَ الْجِہَادِ الْأَصْغَرِ إِلَی الْجِہَادِ الْأَکْبَرِ قِیْلَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ وَمَا الْجِہَادُ الْأَکْبَرُ قَالَ وَہِیَ مُجَاہَدَۃُ النَّفْسِ-(رد المختار علی الدر المختار ج۳ ص ۲۳۵)

एक बार सैयदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जब एक युद्ध से वापस लौट रहे थे, तो आपने फ़रमाया: "हम छोटे जिहाद, अर्थात युद्ध, से लौट रहे हैं और अब सबसे बड़े जिहाद (जिहाद-ए-कबीर), यानी अपने नफ़्स (स्वयं की बुरी इच्छाओं) के विरुद्ध संघर्ष की ओर जा रहे हैं।"

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम इमाम मेहदी - मसीह मौऊद का उपदेश

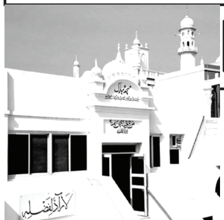

तज़किया-ए-नफ़्स के लिए नफ़्स की इच्छाओं का मुकाबला करना आवश्यक है

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम फ़रमाते हैं:

"ईमान के लिए विनम्रता (ख़ुशू) की अवस्था बीज के समान है। फिर व्यर्थ और बेकार बातों को छोड़ने से ईमान का कोमल और हरा अंकुर निकलता है। इसके बाद अपना माल ज़कात के रूप में देने से ईमान के पेड़ की शाखाएँ निकल आती हैं, जो उसे कुछ मज़बूत करती हैं। फिर नफ़्स की इच्छाओं का मुकाबला करने से उन शाखाओं में अच्छी तरह मज़बूती और दृढ़ता पैदा हो जाती है। इसके बाद अपने वादों और अमानतों की पूरी तरह रक्षा करने से ईमान का पेड़ अपने मज़बूत तने पर खड़ा हो जाता है। फिर जब फल आने का समय होता है, तो उस पर एक और शक्ति का विशेष अनुग्रह होता है, क्योंकि उस शक्ति के आने से पहले न तो पेड़ में फल लग सकते हैं और न ही फूल।" (ज़मीमा बराहीन-ए-अहमदिया, भाग पंचम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 21, पृष्ठ 209, हाशिया)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया:

"अल्लाह तआला ने इस जमाअत को स्थापित करने का जो इरादा किया है, उसका उद्देश्य यही है कि वह सच्ची ईश्वर-परिचय (मारिफ़त), जो दुनिया से समाप्त हो गई थी, और सच्चा तक़्वा तथा पवित्रता, जो इस समय कहीं दिखाई नहीं देते थे, उन्हें फिर से स्थापित करे।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 213–214, नया संस्करण)

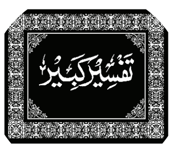

तज़किया-ए-नफ़ूस का काम किसी इंसान के बस की बात नहीं

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"हर व्यक्ति समझ सकता है कि आत्म-शुद्धि (तज़किया-ए-नफ़ूस) का काम किसी इंसान के बस की बात नहीं है। आखिर माता-पिता से बढ़कर प्रेम करने वाला और कौन हो सकता है, लेकिन वे भी अपनी संतान का तज़किया-ए-नफ़्स नहीं कर सकते। तज़किया के लिए दो बातें आवश्यक हैं। पहली, गुनाहों को छोड़ना। दूसरी, आध्यात्मिकता में उन्नति करना।

गुनाह छोड़ने के बारे में फ़रमाया कि हम तुम्हें यह शिक्षा देते हैं कि हर चीज़ केवल अल्लाह तआला की है। आसमान, ज़मीन और पूरी सृष्टि का कण-कण अल्लाह तआला के अधीन है। इसलिए जिस चीज़ को लेने की वह अनुमति दे, केवल वही लो, और जिससे वह मना करे, उससे रुक जाओ। क्योंकि मालिक की अनुमति के बिना किसी चीज़ का उपयोग करने वाला दंड का अधिकारी होता है।

दूसरी बात आध्यात्मिक उन्नति करना है। इसके लिए फ़रमाया कि सब कुछ हमारा है और हमारे ही माध्यम से हर प्रकार की भलाई और बरकत प्राप्त हो सकती है। इसलिए जब तुम हमारे आदेशों का पालन करोगे, तो हम तुम्हें अपनी मग़फ़िरत (क्षमा) की छाया में ले लेंगे, और हमारी सर्वशक्तिमान कृपा तुम्हें हमारे निकट पहुँचा देगी।"

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द संख्या 3, पृष्ठ 531, प्रकाशित: यूके)

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़्ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

प्रिय वतन को "पैग़ाम-ए-सुल्ह" (शांति का संदेश) की आवश्यकता है!

आज़ादी के बाद से जैसे-जैसे हमारा देश नई-नई कठिनाइयों की ओर बढ़ रहा है, वैसे-वैसे परिस्थितियाँ और घटनाएँ यह स्पष्ट कर रही हैं कि पहले की अपेक्षा राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता हमारे लिए लगातार बढ़ती जा रही है। भारत विभिन्न धर्मों, राष्ट्रीयताओं, नस्लों और जातियों से मिलकर बना एक सुंदर गुलदस्ता है। यदि इसमें मेल-मिलाप और एकता के फूल चुने जाएँ, तो उनकी खुशबू दिल और दिमाग को महका देती है। लेकिन यदि इस विविधता को मतभेद और विभाजन की ओर ले जाया जाए, तो चारों ओर दुर्गंध फैल जाती है। केवल दुर्गंध ही नहीं, बल्कि ऐसी पीड़ादायक दुर्गंध, जिसे हम आजकल हर दिन महसूस कर रहे हैं।

अपने स्वार्थों के लिए धर्म का गलत उपयोग, जातियों और समुदायों के बीच भेदभाव का घिनौना खेल भारत को एक खतरनाक खाई की ओर धकेल रहा है। सोशल मीडिया पर नज़र डालने से पता चलता है कि दिन-प्रतिदिन ऐसे लोगों की संख्या कम होती जा रही है जो मेल-मिलाप और आपसी सद्भाव की बात करते हैं। इसके विपरीत, हर समुदाय और धर्म में ऐसे लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है जो नफ़रत फैलाने वाली बातों में लगे हुए हैं। जबकि यह बात निश्चित है कि नफ़रत, मतभेद और झगड़ों से केवल एक समुदाय का नुकसान नहीं होता, बल्कि सभी समुदाय उसकी चपेट में आते हैं। विशेष रूप से हर ओर के गरीब और कमज़ोर वर्ग के लोग अत्याचार की चक्की में सबसे अधिक पिसते हैं। और अत्याचार का यह दायरा दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

जमाअत-ए-अहमदिया के इमाम, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने हाल ही में भारत-पाकिस्तान युद्ध के दिनों में 9 मई 2025 को दिए गए अपने ख़ुत्बा-ए-जुमा में भारत के अहमदियों का ध्यान इस ओर दिलाया था कि वे सिलसिला-ए-आलिया अहमदिया के संस्थापक, हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी, मसीह मौऊद व महदी मऊद, के उस महान व्याख्यान "पैग़ाम-ए-सुल्ह" की ओर अपने देशवासियों का ध्यान आकर्षित करें, जिसमें हज़ूर ने आज से लगभग सवा सौ वर्ष पहले भारतवासियों को मेल-मिलाप, राष्ट्रीय एकता और आपसी भाईचारे की ओर बुलाया था तथा प्रेम और करुणा से भरी हुई एक दर्दभरी नसीहत की थी। यह नसीहत आज भी प्रत्येक भारतीय को उस पर अमल करने का निमंत्रण दे रही है। इसी अवसर पर उसके कुछ अंश इस आशा के साथ प्रस्तुत किए जा रहे हैं कि हज़रत अमीरुल मोमिनीन के निर्देश के अनुसार हम अहमदी अपनी-अपनी भाषाओं में इसका अधिक से अधिक प्रचार करेंगे। इंशाअल्लाह।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"ऐ श्रोताओ! हम सब, चाहे मुसलमान हों या हिंदु, सैकड़ों मतभेदों के बावजूद उस ईश्वर पर ईमान रखने में साझेदार हैं जो संसार का सृष्टिकर्ता और मालिक है। इसी प्रकार 'मनुष्य' कहलाने में भी हम सब समान हैं, अर्थात हम सभी इंसान हैं। और एक ही देश के निवासी होने के कारण हम एक-दूसरे के पड़ोसी भी हैं। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम दिल की सफ़ाई और नेक नीयत के साथ एक-दूसरे के साथी बन जाएँ तथा धर्म और संसार की कठिनाइयों में एक-दूसरे के हमदर्द बनें, और ऐसी हमदर्दी करें कि मानो हम एक-दूसरे के अंग बन जाएँ।

ऐ मेरे देशवासियो! वह धर्म, धर्म नहीं है जिसमें सबके लिए हमदर्दी की शिक्षा न हो। हमारे ईश्वर ने किसी भी जाति या समुदाय में भेद नहीं किया। उदाहरण के लिए, जो-जो मानवीय शक्तियाँ और योग्यताएँ आर्यावर्त की प्राचीन जातियों को दी गई हैं, वही शक्तियाँ अरबों, फ़ारसियों, शाम (सीरिया) के लोगों, चीनियों, जापानियों तथा यूरोप और अमेरिका की जातियों को भी प्रदान की गई हैं। ईश्वर की धरती सबके लिए बिछौने का काम करती है और उसका सूर्य, चंद्रमा तथा अनेक तारे सबके लिए प्रकाश देने वाले दीपक हैं और दूसरी सेवाएँ भी सबके लिए समान रूप से करते हैं। उसके बनाए हुए तत्व : हवा, पानी, अग्नि और मिट्टी : तथा उसकी बनाई हुई दूसरी वस्तुएँ जैसे अनाज, फल और औषधियाँ आदि से सभी जातियाँ लाभ उठा रही हैं। इसलिए ईश्वर के ये गुण हमें शिक्षा देते हैं कि हम भी अपने सभी मानव भाइयों के साथ दया, सद्व्यवहार और भलाई का व्यवहार करें तथा संकीर्ण और कृपण हृदय वाले न बनें।

दोस्तो! अच्छी तरह समझ लो कि यदि हमारी दोनों जातियों में से कोई भी जाति ईश्वर के गुणों का सम्मान नहीं करेगी और उसके पवित्र आचरण के विरुद्ध अपना व्यवहार बनाएगी, तो वह जाति शीघ्र नष्ट हो जाएगी और केवल स्वयं ही नहीं, बल्कि अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी विनाश में डाल देगी।"

"यह बात बिना किसी विवाद के स्वीकार करने योग्य है कि वह सच्चा और पूर्ण ईश्वर, जिस पर ईमान लाना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है, वह 'रब्बुल आलमीन' है। उसकी पालन-पोषण करने वाली सत्ता किसी एक जाति तक सीमित नहीं है, न किसी एक समय तक और न किसी एक देश तक। बल्कि वह सभी जातियों का पालनहार है, सभी युगों का पालनहार है, सभी स्थानों का पालनहार है और सभी देशों का पालनहार वही है। सभी प्रकार की कृपाओं का स्रोत वही है। प्रत्येक शारीरिक और आध्यात्मिक शक्ति उसी से प्राप्त होती है। उसी से समस्त प्राणी पालन-पोषण पाते हैं और प्रत्येक अस्तित्व का सहारा वही है।

ईश्वर की कृपा सबके लिए समान है, जो सभी जातियों, सभी देशों और सभी युगों पर फैली हुई है। ऐसा इसलिए है कि किसी भी जाति को शिकायत करने का अवसर न मिले और कोई यह न कहे कि ईश्वर ने अमुक-अमुक जाति पर तो कृपा की, लेकिन हम पर नहीं की।

जब हमारे ईश्वर के ये गुण हैं, तो उचित यही है कि हम भी उन्हीं गुणों का अनुसरण करें। इसलिए, ऐ मेरे देशवासी भाइयो! यह छोटा-सा पुस्तिका, जिसका नाम है

"पैग़ाम-ए-सुल्ह" पूरे आदर के साथ आप सबकी सेवा में प्रस्तुत की जाती है। और पूरे सच्चे दिल से यह प्रार्थना की जाती है कि वह सर्वशक्तिमान ईश्वर स्वयं आपके दिलों में प्रेरणा दे और हमारी हमदर्दी के रहस्य को आपके हृदयों पर खोल दे, ताकि आप इस मित्रतापूर्ण उपहार को किसी विशेष स्वार्थ या व्यक्तिगत उद्देश्य पर आधारित न समझें।

प्रिय भाइयो! परलोक का मामला सामान्य लोगों से प्रायः छिपा रहता है और आख़िरत के रहस्य उन्हीं पर खुलते हैं जो मरने से पहले अपने नफ़्स पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन इस संसार की भलाई और बुराई को हर दूरदर्शी और समझदार व्यक्ति पहचान सकता है।

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि एकता ऐसी चीज़ है जिससे वे मुसीबतें भी दूर हो जाती हैं जो किसी और तरह दूर नहीं हो सकतीं, और वे कठिनाइयाँ भी हल हो जाती हैं जिनका कोई दूसरा उपाय नहीं होता। इसलिए किसी बुद्धिमान व्यक्ति के लिए यह उचित नहीं कि वह एकता की बरकतों से स्वयं को वंचित रखे।

हिंदु और मुसलमान इस देश की दो ऐसी जातियाँ हैं कि यह सोचना भी असंभव है कि कभी हिंदु मिलकर मुसलमानों को इस देश से निकाल देंगे या मुसलमान एक होकर हिंदुओं को देश से बाहर कर देंगे। बल्कि अब तो हिंदुओं और मुसलमानों का संबंध चोली-दामन जैसा है। यदि एक पर कोई विपत्ति आएगी तो दूसरा भी उससे प्रभावित होगा। और यदि एक समुदाय केवल अपने घमंड और श्रेष्ठता के अहंकार में दूसरे समुदाय को तुच्छ समझना चाहेगा, तो वह स्वयं भी अपमान के दाग से नहीं बच सकेगा। और यदि कोई अपने पड़ोसी के प्रति हमदर्दी दिखाने में कमी करेगा, तो उसका नुकसान उसे स्वयं भी उठाना पड़ेगा। तुम दोनों समुदायों में से जो व्यक्ति दूसरे समुदाय के विनाश की सोचता है, उसकी मिसाल उस व्यक्ति जैसी है जो जिस शाखा पर बैठा है, उसी को काट रहा है।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अब आप लोग शिक्षित भी हो गए हैं। इसलिए अब बैर और दुश्मनी छोड़कर प्रेम में आगे बढ़ना ही उचित है। बेरुख़ी छोड़कर आपसी हमदर्दी अपनाना आपकी समझदारी के अनुकूल है। दुनिया की कठिनाइयाँ भी एक ऐसे रेगिस्तान की यात्रा के समान हैं, जो तेज़ धूप और भीषण गर्मी में की जाती है। इसलिए इस कठिन यात्रा के लिए आपसी एकता के उस ठंडे पानी की आवश्यकता है, जो इस जलती हुई आग को ठंडा कर दे और प्यास के समय मरने से बचा ले।

ऐसे नाज़ुक समय में यह लेखक आपको शांति और मेल-मिलाप की ओर बुलाता है, जबकि दोनों पक्षों को इसकी बहुत अधिक आवश्यकता है।

हज़रत संस्थापक सिलसिला-ए-आलिया अहमदिया के इस व्याख्यान के ये वे दूरदर्शिता से भरपूर उद्धरण हैं, जिन्हें आज भारत में फैलाने की आवश्यकता है।

अल्लाह तआला हम सबको इस पर अमल करने और इसे फैलाने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा)

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 जुलाई 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

आपकी सामान्य आदत यह थी कि जो कुछ भी आप किसी को देते थे, वह दिखावे के लिए नहीं होता था, बल्कि केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने और उसकी सृष्टि पर दया करने के भाव से होता था

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ.
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُلِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ.
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

शेष .. उन्होंने क्षमा चाही और कहा : "मैं इसमें कुछ नहीं दे सकता।" हालाँकि यदि चाहते तो बहुत कुछ दे सकते थे। उस व्यक्ति ने कहा :

"हम आपसे ज़्यादा नहीं माँगते। केवल बरकत के लिए कुछ दे दीजिए।"

आख़िरकार उन्होंने लगभग दो आने के बराबर एक छोटा-सा सिक्का दे दिया।

शाम को वही व्यक्ति वह सिक्का वापस लाया और बोला :

"हुज़ूर! यह सिक्का तो खोटा निकला।"

इस पर इमाम अबू हनीफ़ा बहुत प्रसन्न हुए और फ़रमाया :

"बहुत अच्छा हुआ। वास्तव में मेरा मन कुछ देने का था ही नहीं। जिस प्रकार तुम लोग मस्जिद बना रहे हो, मुझे उसमें धन देना उचित नहीं लगा। मस्जिदें बहुत हैं और मुझे इसमें अपव्यय दिखाई देता है।"

(साभार: मलफ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 170–171, संस्करण 2022)

अर्थात् लोग नमाज़ तो पढ़ते नहीं, लेकिन दिखावे के लिए मस्जिदें बनाते हैं।

बच्चों के साथ भी आप उनकी इच्छा के अनुसार व्यवहार करते थे।

इसलिए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि बीबी रानी मोसिया, जो अज़ीज़ा बेगम (पत्नी हकीम मुहम्मद उमर साहिब, क़ादियान) की माता थीं, उन्होंने बयान किया :

"मैंने 1901 में पत्र द्वारा बैअत की थी। चूँकि मेरी बेटी अज़ीज़ा बेगम क़ादियान में रहती थीं, इसलिए मुझे भी 1902 में क़ादियान आने की इच्छा हुई।"

मेरे साथ मेरी छोटी बेटी भी थी।

जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सुबह के समय बाग़ की ओर सैर के लिए जाते, तो मैं भी प्रायः साथ चली जाती थी।

वे लिखती हैं : "अब उम्र अधिक हो जाने के कारण बहुत-सी बातें याद नहीं रहीं। लेकिन एक घटना मुझे अच्छी तरह याद है।"

एक सुबह जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भोजन कर रहे थे, मैं भी वहाँ पहुँची। मेरी छोटी बेटी रोने लगी।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने पूछा : "यह क्यों रो रही है?" मैंने अर्ज़ किया : "रोटी माँग रही है।" आपने रोटी मँगवाकर उसे दे दी, लेकिन वह फिर भी चुप नहीं हुई। दूसरी बार पूछने पर मैंने अर्ज़ किया : "यह वही रोटी माँग रही है जो हुज़ूर स्वयं खा रहे हैं।"

इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी वही रोटी, जो स्वयं खा रहे थे, उसे दे दी। लड़की ने वह थोड़ी-सी रोटी ले ली, चुप हो गई और बड़े प्रेम से खाने लगी।

(सीरतुल महदी, जिल्द 2, भाग 5, पृष्ठ 188, रिवायत संख्या 1281)

जब आप लोगों से कोई काम लेते थे, तो उनके आराम और सुविधा का भी पूरा ध्यान रखते थे। डॉक्टर अत्तरुद्दीन साहिब बयान करते हैं कि :

हज़रत मिर्ज़ा मीर मुहम्मद इसहाक साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, जो उस समय छोटे थे, कहीं बाहर चले गए।

जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इसका पता चला, तो आप तुरंत चिंतित हो गए। आपने अपने सेवक को बोर्डिंग हाउस भेजा और तेज़ दौड़ने वाले विद्यार्थियों को बुलवाया।

उस समय क़िबला भाई अब्दुर्रहीम साहिब, जो नए मुसलमान थे, बोर्डिंग के सुपरिंटेंडेंट थे। उन्होंने मुझे और तीन-चार अन्य लड़कों को भेजा और इस दल का प्रमुख मुझे बनाया।

जब हम हुज़ूर अलैहिस्सलाम के पास पहुँचे, तो आपने बड़े स्नेह से फ़रमाया :

"आप लोगों को तकलीफ़ हुई है। मैंने आपको बुलाया है और एक काम के लिए जाना पड़ेगा। संभव है कि लौटने में देर हो जाए, रास्ते में घूमना भी पड़े और भूख भी लग जाए।"

इसके बाद आपने मुझे बहुत-सी रोटियाँ दीं और दाल का पका हुआ सालन भी स्वयं लाकर हमें दिया, क्योंकि हम खोज के लिए जा रहे थे और रास्ते में आवश्यकता पड़ सकती थी। वे कहते हैं : हम चलने की तैयारी ही कर रहे थे कि उसी समय क़िबला शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, जनाब मिर्ज़ा मीर मुहम्मद इसहाक साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को साथ लेकर आ गए। वे मिल गए थे, इसलिए हमें जाने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

इस घटना से भी स्पष्ट होता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने सेवकों के साथ भी कितना प्रेम और करुणा का व्यवहार करते थे।

(साभार: रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 3, पृष्ठ 346, रिवायत: हज़रत डॉक्टर अत्तरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु)

हज़रत मुहम्मद दीन साहिब, पुल भागो साहिब, जो क़ादियान से लगे हुए क़ादिराबाद गाँव में रहते थे, बयान करते हैं कि :

"कई बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने घर से भोजन आदि साथ लाकर हमारे गाँव की मस्जिद में खाते थे और हमें भी उसमें से दिया करते थे।"

(रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 378, रिवायत: हज़रत मुहम्मदी (मुहम्मद दीन) साहिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, पुल भागो साहिब)

पत्नी से लिया गया कर्ज़ भी लौटाना आवश्यक है

पिछले ख़ुत्बे में मैंने वह घटना बयान की थी कि जब लंगर का खर्च बढ़ गया, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत अम्माँ जान रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के गहने बेचकर खर्च पूरा किया था।

इस पर पिछले सप्ताह किसी ने मुझसे पूछा कि क्या इसका मतलब यह है कि आवश्यकता पड़ने पर पत्नी के गहने खर्च किए जा सकते हैं और वह धन पति के अधिकार में आ सकता है?

इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि : हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह धन कर्ज़ के रूप में लेते थे और उसे वापस भी करते थे।

इसी संबंध में एक और रिवायत है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूल बीबी साहिबा, स्वर्गीय हज़रत हामिद अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी, ने बताया : "जब अकाल पड़ा, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत उम्मुल मोमिनीन से कुछ धन कर्ज़ लिया।"

पहली घटना में भी कर्ज़ या गिरवी रखने की बात थी। जब वह गिरवी छुड़ाई गई, तो उसका भुगतान भी आपने स्वयं किया था। वे आगे कहती हैं : "आपने कर्ज़ लेकर गेहूँ ख़रीदा और घर का खर्च पूरा किया।"

साथ ही लंगर का खर्च भी पूरा किया, क्योंकि लंगर का अधिकांश भोजन भी आपके घर में ही पकता था।

इसके बाद आपने चौधरी रुस्तम अली साहिब से हाफ़िज़ हामिद अली साहिब के माध्यम से 500 रुपये मँगवाए और साथ ही घी के कई मटके भी मँगवाए।

जब रुपये आ गए, तो आपने हज़रत उम्मुल मोमिनीन का पूरा कर्ज़ चुका दिया।

वे आगे कहती हैं : "मैंने कई बार देखा कि हाफ़िज़ साहिब रुपयों से भरे थैले लाया करते थे। उन दिनों अकाल पड़ा हुआ था और धन की आवश्यकता थी। रात के समय उन रुपयों की रखवाली मुझे करनी पड़ती थी।"

(सीरतुल महदी, जिल्द 2, भाग 4, पृष्ठ 117, रिवायत संख्या 1145)

अर्थात् यह लोगों की ओर से सहायता नहीं थी, बल्कि बाक़ायदा लिया गया कर्ज़ था।

इसलिए चाहे हज़रत अम्माँ जान रज़ियल्लाहु अन्हा से कर्ज़ लिया हो या किसी और से, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उसे अवश्य वापस किया करते थे।

हज़रत बाबू ग़ुलाम मुहम्मद साहिब बयान करते हैं :

"क़ादियान में कई बार गाँव की औरतें, जिनके हाथ गोबर से सने होते थे और कपड़े भी मैले-कुचैले होते थे, हुज़ूर अलैहिस्सलाम की सेवा में आकर अर्ज़ करतीं :

'मिर्ज़ा जी! मेरी बेटी बीमार हो गई है। उसे होश नहीं आता और उसे बहुत तेज़ बुखार है।'

फिर अपने हाथों की ओर इशारा करके कहतीं : 'देखिए, हम तो हाथ भी धोकर नहीं आए।'

एक बार ऐसी ही एक औरत, जिसके हाथ गोबर से भरे हुए थे, अपना काम करते-करते हुज़ूर अलैहिस्सलाम के पास आई और अर्ज़ किया :

'मेरी बेटी बहुत बीमार है। उसे तेज़ बुखार है और वह बिल्कुल बेहोश है।'

आपने पूछा : 'क्या तुम कोई बर्तन लाई हो?' उसने उन्हीं गोबर लगे हाथों से मिट्टी

का एक कटोरा आपकी सेवा में पेश कर दिया।

आपने वह कटोरा लेकर उसमें 'रूह केवड़ा' भर दिया और लगभग पाँच रत्ती कस्तूरी भी दी। फिर फ़रमाया : 'इस कटोरे का आधा-आधा दो बार पिला देना और यह दवा भी दे देना।' साथ ही यह भी फ़रमाया : 'बाद में मुझे बताना कि बच्ची की तबीयत कैसी है।'

(साभार: रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 249, रिवायत: हज़रत बाबू गुलाम मुहम्मद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु)

गरीबों के साथ भी आपका अत्यन्त अच्छा व्यवहार और बड़ा उपकार था।

शैख़ मुहम्मद नसीब साहिब बयान करते हैं : "एक बार मुझे आवश्यकता पड़ी, तो मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में लिखा कि मुझे दस रुपये कर्ज़ के रूप में भेज दें। मैं दो किस्तों में लौटा दूँगा।" आपने तुरंत वह राशि भेज दी।

(रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 5, पृष्ठ 446, रिवायत: हज़रत शैख़ मुहम्मद नसीब साहिब)

वैसे तो आपकी आदत ही यह थी कि आपने कभी किसी ज़रूरतमंद को मना नहीं किया। और हम यह भी देख चुके हैं कि आप वापस माँगते भी नहीं थे। बल्कि यदि कोई लौटाने आता, तो उससे कहते : "नहीं, हमारा और तुम्हारा माल एक ही है। इसे अपने पास ही रखो।" यही आपकी स्थायी आदत थी।

(साभार: सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग तृतीय, पृष्ठ 307)

भोजन में बरकत का एक प्रसंग हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि मियाँ अब्दुल्लाह साहिब सनौरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा :

एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कुछ मेहमानों को भोजन पर बुलाया। उनके लिए घर में भोजन तैयार कराया गया।

लेकिन ठीक भोजन के समय उतने ही और मेहमान आ गए और मस्जिद मुबारक मेहमानों से भर गई। मस्जिद छोटी थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने घर के अंदर कहलवाया : "और मेहमान आ गए हैं, इसलिए भोजन अधिक भेजो।"

यह तो हो ही नहीं सकता था कि आपके दस्तरख़ान पर कुछ लोग खाएँ और बाकी बिना भोजन किए लौट जाएँ। यह आपकी प्रकृति और आपकी उदारता के बिल्कुल विरुद्ध था। आप तो हर हाल में सबको भोजन कराना चाहते थे।

इस पर हज़रत बीबी साहिबा, हज़रत अम्माँ जान रज़ियल्लाहु अन्हा ने आपको अंदर बुलाकर कहा :

"भोजन तो बहुत थोड़ा है। केवल उन्हीं कुछ मेहमानों के लिए बनाया गया था, जिनके बारे में पहले बताया गया था। बाकी भोजन का तो किसी तरह प्रबंध हो सकता है, लेकिन ज़र्दा (मीठे चावल) बहुत कम है। उसका क्या किया जाए?"

फिर उन्होंने स्वयं कहा : "ज़र्दा नहीं भेजती, बाकी भोजन भेज देती हूँ।" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "नहीं, यह ठीक नहीं है। तुम ज़र्दे का बर्तन मेरे पास ले आओ।" इसलिए बर्तन लाया गया।

आपने उस बर्तन पर एक रूमाल डाल दिया और फिर रूमाल के नीचे अपना हाथ ले जाकर अपनी उँगलियाँ ज़र्दे में डाल दीं।

इसके बाद फ़रमाया : "अब सब लोगों के लिए भोजन निकालो। अल्लाह इसमें बरकत देगा।" मियाँ अब्दुल्लाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि :

ज़र्दा सब लोगों को परोसा गया। सभी ने भरपेट खाया और उसके बाद भी कुछ बच गया। मियाँ अब्दुल्लाह साहिब ने बताया कि घर के अंदर की यह पूरी घटना स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे सुनाई थी कि जब घर में यह बात हुई, तब मैंने ऐसा किया और अल्लाह तआला ने उसमें बरकत डाल दी।

(साभार: सीरतुल महदी, जिल्द 1, भाग 1, पृष्ठ 133–135, रिवायत संख्या 144)

आप बिना किसी औपचारिकता के अपने मित्रों को मौसमी फल आदि भी खिलाया करते थे।

कोई बनावट या दिखावा नहीं होता था। आपकी उदारता हमेशा स्वाभाविक होती थी। हज़रत मुमताज़ अली साहिब सिद्दीकी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं :

"मुझे याद है कि बाग़ में एक ऊँचा चबूतरा था, जिसे बाद में फिर से ठीक किया गया। वहाँ हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपने साथियों के साथ बैठा करते थे और कभी-कभी वहीं बैठकर मौसमी फल भी खाते थे।

मुझे एक घटना विशेष रूप से याद है कि एक बार हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपने मुबारक हाथों से मुझे दो आम दिए और इसी प्रकार बाकी साथियों को भी दो-दो आम प्रदान किए।"

(रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 384, रिवायत: हज़रत मुमताज़ अली सिद्दीकी साहिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

ये हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उदारता, दानशीलता और उपकार के कुछ उदाहरण हैं। आपने अपने आका हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुसरण करते हुए यह आदर्श प्रस्तुत किया। आपकी इस दया, उदारता और उपकार से अपने और पराए, यहाँ तक कि आपके विरोधी भी लाभ उठाते रहे।

★ ★ ★

पृष्ठ 8 का शेष

(मुस्नद अल-इमाम अहमद बिन हंबल, मुस्नद हुज़ैफ़ा बिन अल-यमान, जिल्द 7, पृष्ठ 705, हदीस 23675, आलमुल-कुतुब, 1998 ई.)

अम्र बिन शुऐब अपने पिता से और वह उनके दादा से रिवायत करते हैं। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

निश्चित रूप से अल्लाह पसंद करता है कि उसकी नेमतों के निशान उसके बंदों पर दिखाई दें।

(जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल-अदब, बाब मा जाअ अन्नल्लाह तआला युहिब्बु अय्युरा..., हदीस 2819)

यह भी अल्लाह तआला की शुक्रगुजारी है कि उसकी दी हुई नेमतें इंसान पर दिखाई देनी चाहिए। इंसान पर उनका असर और उनकी झलक दिखाई देनी चाहिए।

इसी तरह एक रिवायत में बयान हुआ है। अबुल-अहवस अपने पिता से रिवायत करते हैं। उन्होंने कहा: मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पुराने और खराब कपड़ों में हाज़िर हुआ। यानी अच्छे कपड़े नहीं थे, बल्कि खराब कपड़े थे। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे पूछा: क्या तुम्हारे पास माल है?

उन्होंने अर्ज किया: जी हाँ!

आपने पूछा: किस तरह का माल है? तुम कहते हो कि मेरे पास माल है, तो किस तरह का माल तुम्हारे पास है?

उन्होंने अर्ज किया कि अल्लाह तआला ने मुझे ऊँट भी दिए हुए हैं, भेड़-बकरियाँ भी हैं, घोड़े भी मेरे पास हैं और गुलाम भी मुझे दे रखे हैं। मेरे पास बहुत माल है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

जब अल्लाह तआला ने तुम्हें माल दिया है तो उसकी नेमत और उसका सम्मान तुम पर दिखाई देना चाहिए।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-लिबास, बाब फिल-खलक़ान व फी ग़स्लिस-सौब, हदीस 4063)

इसकी शुक्रगुजारी होनी चाहिए और शुक्रगुजारी का इज़हार यह है कि ये गंदे कपड़े पहनकर न आओ। ये पुराने और ख़राब कपड़े पहनकर न आओ। अच्छे कपड़े पहना करो। अल्लाह तआला की नेमतों का इज़हार किया करो।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। आपने एक व्यक्ति को देखा जिसके बाल बिखरे हुए थे। यानी बाल अस्त-व्यस्त थे, ठीक तरह से संवारे हुए नहीं थे और कंघी नहीं की हुई थी। आपने फ़रमाया:

क्या इसे कोई ऐसी चीज़ नहीं मिलती जिससे अपने बालों को ठीक कर सके?

साथियों से कहा कि यह अपने बालों को धोकर और संवारकर कंघी क्यों नहीं करता।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक दूसरे व्यक्ति को देखा जो मैले कपड़े पहने हुए था। आपने फ़रमाया:

क्या इसे पानी उपलब्ध नहीं है जिससे अपने कपड़े धो सके?

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-लिबास, बाब फिल-खलक़ान व फी ग़स्लिस-सौब, हदीस 4062)

पानी तो मिलता है, गंदे कपड़े पहनने की बजाय कपड़े धोओ और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो। साफ़-सफ़ाई जहाँ सफाई का पहलू दिखाती है, वहीं इसमें शुक्रगुजारी का भी पहलू है कि अल्लाह तआला का शुक्र भी अदा करना चाहिए। ऐसा हुलिया नहीं बनाना चाहिए कि लोग कहें कि यह कैसी हालत बना रखी है।

इसी तरह एक रिवायत है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की है कि आपने फ़रमाया: जन्नत में वह व्यक्ति दाखिल नहीं होगा जिसके दिल में ज़र्रे के बराबर भी घमंड है। एक आदमी ने कहा: इंसान पसंद करता है कि उसके कपड़े अच्छे हों और उसके जूते अच्छे हों। आपने फ़रमाया: अल्लाह तआला सुंदर है और सुंदरता को पसंद करता है। इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला भी सुंदर है और अल्लाह तआला सुंदरता को पसंद करता है। लेकिन घमंड यह है कि अपने आपको बड़ा समझने के कारण सच्ची बात को न मानना और लोगों को छोटा समझना।

[(सहीह मुस्लिम, अनुवादित, किताबुल-ईमान, बाब: घमंड की मनाही और उसका वर्णन, हदीस 123, जिल्द 1, पृष्ठ 83, प्रकाशित नूर फ़ाउंडेशन)]

सच्ची बात से इनकार करना और लोगों से घृणा के साथ पेश आना भी घमंड है। या अच्छे कपड़े पहनकर फिर घमंड करना, तो वह घमंड होगा। लेकिन अच्छे कपड़े पहनकर अगर विनम्रता से दूसरों से मिलते हो और उनका हक अदा करते हो तो यह घमंड नहीं है।

शेष ..

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 जुलाई 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

आपकी सामान्य आदत यह थी कि जो कुछ भी आप किसी को देते थे, वह दिखावे के लिए नहीं होता था, बल्कि केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने और उसकी सृष्टि पर दया करने के भाव से होता था

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला ने जब इंसान को पैदा किया तो उससे पहले उसके लाभ के लिए अनगिनत नेमतें पैदा कीं। अल्लाह तआला का यह उपकार और अपने बंदों के साथ यह व्यवहार निश्चित रूप से इस बात की मांग करता है कि बंदा उसका शुक्रगुजार बने।

हर नबी ने अपने मानने वालों को नसीहत की कि अल्लाह तआला के शुक्रगुजार बंदे बनो। और सबसे बढ़कर शुक्रगुजारी का नमूना हमारे आका और सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिखाया।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने हर काम से अल्लाह तआला की शुक्रगुजारी का इज़हार किया। आपकी रोने-गिड़गिड़ाने, आह-ओ-फ़ुग़ाँ करने और अल्लाह तआला के सामने अत्यंत विनम्रता से दुआ करते हुए देखकर जब आपसे पूछा गया कि अल्लाह तआला ने आपसे हर प्रकार की कामयाबियों के वादे किए हैं और आपको कामयाबियाँ भी प्रदान कर रहा है, तो फिर इतनी आह-ओ-फ़ुग़ाँ क्यों? तो आपने फ़रमाया: क्या मैं इन इनामों पर अल्लाह तआला का शुक्रगुजार बंदा न बनूँ? क्या विनम्रता के साथ उसके सामने झुककर उसका शुक्रिया अदा न करूँ?

[(सहीह अल-बुखारी, किताबुत-तफ़्सीर, बाबु क़ौलिही "लियग़फ़िरा लकल्लाहु मा तक़द्दमा मिन ज़म्बिका", हदीस 4837, अनुवादित जिल्द 12, पृष्ठ 83, प्रकाशित नज़ारत इशाअत)]

हर अवसर पर जब आपने अपनी शुक्रगुजारी के व्यावहारिक नमूने दिखाए, वहाँ आपने अपनी उम्मत को भी शुक्रगुजारी की नसीहत की। इसके तरीके सिखाए। अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने के लिए दुआएँ सिखाईं।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इसी आदर्श जीवन, दुआओं और नसीहतों का आज मैं उल्लेख करूँगा। एक रिवायत में आता है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ईमान दो हिस्सों पर आधारित है। आधा सब्र में और आधा शुक्र में है।

(अल-जामिअ लि-शुअबिल-ईमान, जिल्द 12, पृष्ठ 193-192, हदीस 9264, मक्तबतुर-रुश्द, 2003 ई.)

असल में सब्र भी शुक्रगुजारी के एक पहलू को ही उजागर करता है। इसलिए यदि देखा जाए तो वास्तव में पूरा ईमान इसी शुक्रगुजारी से होता है।

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मोमिन का मामला भी अजीब है। उसका मामला पूरी तरह भलाई वाला है और यह मोमिन के अलावा किसी और के लिए नहीं है। यदि उसे कोई खुशी पहुँचती है तो वह शुक्र करता है और यह उसके लिए भलाई है। और यदि उसे कोई तकलीफ पहुँचती है तो वह सब्र करता है, यह भी उसके लिए भलाई है।

[(सहीह मुस्लिम, किताबुज़-ज़ुहृद वर-रक़ाइक़, बाबुल-मोमिनु अम्रुहु कुल्लुहू ख़ैर, हदीस 5304, अनुवादित जिल्द 15, पृष्ठ 194, प्रकाशित नूर फाउंडेशन)]

भलाई इसलिए कि अल्लाह तआला फरमाता है कि "निश्चित रूप से अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।" [(अल-बक़रह: 154)]

और फिर फ़रमाया कि "और सब्र करने वालों को खुशखबरी सुना दे।"

(अल-बक़रह: 156)]

अतः जिसके साथ अल्लाह तआला हो और उसे खुशखबरी भी दे रहा हो, उसके लिए इससे बड़ी भलाई और क्या हो सकती है। यह वास्तविक सब्र भी उसी समय हो सकता है जब इंसान अल्लाह तआला की सभी नेमतों का शुक्रगुजार बंदा बने।

अतः

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के छोटे से वाक्य और शब्द में भी ज्ञान और बुद्धिमत्ता के खजाने होते हैं।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो लोगों का शुक्रिया अदा नहीं करता, वह अल्लाह तआला का भी शुक्र अदा नहीं करता।

[(जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल-बिर्र वस्सिला, बाबु मा जाअ फ़िश-शुक्रि लिमन अहसना इलैक, हदीस 1954)]

अल्लाह तआला की शुक्रगुजारी तो है ही, लेकिन आपने बंदों की शुक्रगुजारी का भी विशेष रूप से आदेश दिया। और यदि शुक्रगुजारी के ये भाव और विचार हों तो समाज एक सुंदर दृश्य प्रस्तुत करेगा और यही वह वास्तविक इस्लामी समाज है जिसे आप पैदा करना चाहते थे।

फिर एक रिवायत में आता है। हज़रत नुमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मिम्बर पर फ़रमाया: जो थोड़ी चीज़ पर शुक्र अदा नहीं करता, वह अधिक पर भी शुक्रगुजार नहीं होता। और जो लोगों का शुक्रिया अदा नहीं करता, वह अल्लाह तआला का भी शुक्र अदा नहीं करता। अल्लाह की नेमत का उल्लेख करना भी एक प्रकार का शुक्र है और उसका उल्लेख न करना नाशुक्री है। और आपने फ़रमाया कि जमाअत रहमत है और फूट अज़ाब है।

(मुस्नद अल-इमाम अहमद बिन हंबल, मुस्नद अन-नुमान बिन बशीर, जिल्द 6, पृष्ठ 297, हदीस 18640, आलमुल-कुतुब, 1998 ई.)

जमाअत में रहो, अल्लाह तआला के शुक्रगुजार बंदे बनो और एक होकर रहो, तभी तुम्हें अल्लाह तआला की नेमतों में से हिस्सा भी मिलेगा। और यदि फूट डालोगे, तुम्हारे दिल फटे हुए होंगे तो फिर तुम अल्लाह तआला के फज़्लों के वारिस नहीं बन सकते।

किस गहराई के साथ आपने शुक्रगुजारी की शिक्षा दी है।

इस बारे में एक रिवायत है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी व्यक्ति से मिलते तो उससे पूछते कि तुम कैसे हो? तो वह कहता कि बहुत अच्छा हूँ और मैं अल्लाह तआला की प्रशंसा करता हूँ। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते: अल्लाह तआला तुम्हें अच्छा ही रखे।

एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उससे मिले तो यही सवाल किया। जवाब में उसने कहा कि अगर मैं शुक्र करूँ तो अच्छा हूँ। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चुप रहे।

उसने अर्ज़ किया: हे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! जब आप पूछते थे और मैं जवाब देता था तो आप यह दुआ किया करते थे। जब मैं कहता था कि मैं अल्लाह तआला की प्रशंसा करता हूँ तो आप दुआ दिया करते थे कि अल्लाह तआला तुम्हें अच्छा रखे। लेकिन आज आप खामोश हो गए हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब मैं तुमसे पूछता और तुम कहते कि बहुत अच्छा हूँ और मैं अल्लाह तआला की प्रशंसा करता हूँ, तो मैं तुम्हारे लिए दुआ करता था कि अल्लाह तआला तुम्हें अच्छा रखे और अल्लाह तआला अपनी नेमतों से और अधिक नवाज़े। लेकिन आज तुमने कहा कि अगर मैं शुक्र करूँ। यानी तुम इस संदेह में पड़े हुए हो कि अगर मैं शुक्र करूँ तो ठीक है, अल्हम्दुलिल्लाह, वरना मेरी हालत इतनी भी अच्छी नहीं है कि मैं कहूँ कि मैं बहुत अच्छा हूँ। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं खामोश हो गया।

(मुस्नद अल-इमाम अहमद बिन हंबल, मुस्नद अनस बिन मालिक, जिल्द 4, पृष्ठ 618, हदीस 13571, आलमुल-कुतुब)

आपने कहा कि तुम शक में पड़ गए थे। तुमने अल्लाह तआला के बारे में बुरा गुमान किया है। आपको यह बिल्कुल सहन नहीं था कि किसी के मन में अल्लाह तआला की शुक्रगुजारी के मामले में थोड़ा-सा भी नकारात्मक विचार पैदा हो।

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस व्यक्ति के साथ कोई भलाई की गई और उसने भलाई करने वाले से कहा, "जज़ाकल्लाहु, जज़ाकल्लाहु ख़ैरन" अर्थात् अल्लाह तआला तुम्हें सबसे अच्छी बदला दे, तो उसने उसके प्रति प्रशंसा का हक

अदा कर दिया।

(जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल-बिर्र वस्सिला, बाबु मा जाअ फ़िस्सना बिल-मअरूफ़, हदीस 2035)

इसी तरह हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से एक रिवायत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

जब अल्लाह तआला किसी कौम को भलाई और बरकत देना चाहता है तो उनकी उम्रें बढ़ा देता है और उन्हें शुक्र की प्रेरणा देता है। यानी शुक्र अदा करने की तौफ़ीक देता है।

(कंज़ुल-उम्माल, किताबुल-अख़लाक़, जिल्द 2, जुज़ 3, पृष्ठ 104, हदीस 6409, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या)

अतः कौमी तरक्की के लिए भी शुक्रगुजारी जरूरी है। जमाअती तरक्की के लिए भी शुक्रगुजारी जरूरी है। व्यक्तिगत तरक्की के लिए भी शुक्रगुजारी जरूरी है। अल्लाह तआला की शुक्रगुजारी, आपस में एक-दूसरे की शुक्रगुजारी और हर उस व्यक्ति की शुक्रगुजारी जिससे किसी भी प्रकार का लाभ पहुँचे, यह बहुत जरूरी है और यही कौमी एकता का कारण बनती है।

फिर शुक्रगुजारी की सही समझ पैदा करने के लिए आपने एक रिवायत में जो बहुत अच्छी नसीहत फरमाई, उसका इस तरह उल्लेख मिलता है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान फरमाती हैं। मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अक्सर फ़रमाया करते थे कि तुम्हारी कविताओं का क्या हुआ? यानी कोई शेर सुनाओ। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को शेर याद थे और आप सुनाया करती थीं। तो मैंने अर्ज किया: कौन से शेर? वे तो बहुत से हैं जो मुझे याद हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते: शुक्र के बारे में शेर सुनाओ। तो मैं अर्ज करती थी: मेरे माँ-बाप आप पर कुर्बान हों! शायर कहता है:

तू उस कमजोर का सहारा बन, जिसकी कमजोरी तुझे बदला नहीं दे सकती। एक दिन तू देखेगा कि उसके परिणाम सामने आएँगे।

सिर्फ बदले के लिए सहारा न बनो बल्कि उसका सहारा बनो जो तुम्हें बदला नहीं देगा और फिर तुम देखोगे कि उसके परिणाम भी सामने आएँगे। यह शायर ने कहा।

फिर वह कमजोर कभी न कभी या तो तुझे उसका बदला देगा या तेरी प्रशंसा करेगा। और जो तेरे इस उपकार के लिए, जो तूने किया है, तेरी प्रशंसा करता है, मानो उसने इस उपकार का बदला चुका दिया।

अल्हम्दुलिल्लाह, शुक्रिया कह दिया तो उसने भी उस उपकार का बदला चुका दिया। फिर उन्हीं शेरों में आप रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि:

जब तू किसी सम्मानित व्यक्ति से रिश्तेदारी निभाने का इरादा करेगा तो तू उसकी रस्सी को पुरानी और कमजोर नहीं पाएगा।

रिश्तेदारी निभाओगे तो यह नहीं है कि तुमने किसी कमजोर रस्सी को हाथ लगाया है, बल्कि वह मजबूत रस्सी है क्योंकि अल्लाह तआला उसका बदला देगा।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि जब मैंने ये शेर सुनाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ आयशा! यह बिल्कुल सही है। मुझे जिब्राइल ने बताया कि अल्लाह तआला कयामत के दिन मखलूक को उठाएगा तो अपने एक बंदे से पूछेगा कि मेरे एक बंदे ने तुम पर उपकार किया। क्या तुमने उसका शुक्रिया अदा किया?

तो वह जवाब में कहेगा: ऐ मेरे रब! मुझे मालूम था कि यह तेरी ओर से उपकार है, इसलिए मैंने तेरा शुक्रिया अदा किया। बंदे का तो नहीं किया लेकिन तेरा शुक्रिया अदा कर दिया।

इस पर अल्लाह तआला कहेगा कि:

अगर तूने उसका शुक्र अदा नहीं किया जिसके माध्यम से मैंने तुझ पर उपकार किया था तो तूने मेरा भी शुक्रिया अदा नहीं किया।

(कंज़ुल-उम्माल, किताबुल-अख़लाक़, जिल्द 2, जुज़ 3, पृष्ठ 297, हदीस 8621, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या)

एक सुंदर समाज बनाने के लिए यह कितना सुंदर काम है।

फिर शुक्रगुजारी की दुआ सिखाते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ग़न्नाम बयाज़ी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस व्यक्ति ने जब सुबह की और उसने यह दुआ की कि ऐ अल्लाह! जो भी नेमत मेरे साथ सुबह के समय है, वह तेरी ओर से है। तू एक है। तेरा कोई साझी नहीं। इसलिए तेरे लिए प्रशंसा है और तेरे लिए शुक्र है, तो उसने अपने दिन का शुक्र अदा कर दिया। और जब वह शाम करता है और उसने ऐसा ही कहा तो उसने अपनी रात का शुक्र अदा कर दिया।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-अदब, बाब: मा यक़ूलु इज़ा अस्बह, हदीस 5073)

इसी तरह एक रिवायत है। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका हाथ पकड़ा और फ़रमाया: ऐ मुआज़! अल्लाह की कसम! मैं निश्चित रूप से तुमसे प्रेम करता हूँ। फिर फ़रमाया: ऐ मुआज़! मैं तुम्हें ताकीद करता हूँ कि हर नमाज़ के बाद यह कहना कभी न छोड़ना:

अल्लाहुम्मा अइन्नी अला ज़िक्रिका व शुकरिका व हुस्नि इबादतिक।

अर्थात्: ऐ अल्लाह! अपने ज़िक्र के लिए, अपने शुक्र के लिए और अपनी इबादत को अच्छे ढंग से करने के लिए मेरी मदद फरमा।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-वित्र, बाब फ़िल-इस्तिग़फ़ार, हदीस 1522)

फिर एक रिवायत में है। अबू अलआ बिन शिख्खीर ने बनू हंज़ला के एक व्यक्ति से रिवायत की है। उसने कहा कि मैं हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ एक यात्रा में था। उन्होंने कहा: क्या मैं तुम्हें वह न सिखाऊँ जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें सिखाया था कि तुम कहो:

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे हर काम में स्थिरता माँगता हूँ और तुझसे हिदायत में मजबूती माँगता हूँ और तुझसे तेरी नेमत का शुक्र माँगता हूँ और तेरी इबादत का अच्छा ढंग माँगता हूँ और तुझसे सच बोलने वाली ज़बान माँगता हूँ और स्वस्थ हृदय में तेरी पनाह चाहता हूँ और उस बुराई से जो तू जानता है, और उस भलाई को माँगता हूँ जिसे तू जानता है, और तुझसे माफी माँगता हूँ और उस चीज़ से भी, जिसे तू जानता है, माफी माँगता हूँ। यानी अल्लाह तआला से भी और दुनिया के हर व्यक्ति से भी। हर वह चीज़ जो माफी कर सकती है, जो इंसान को लाभ पहुँचा सकती है। तू निश्चित रूप से छिपी हुई बातों का ज्ञान रखने वाला है।

(जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुद-दअवात, बाब मिन्हु [दुआ: अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका...], हदीस 3407)

क्योंकि अल्लाह तआला ही जानता है कि कौन लाभदायक है और कौन नहीं। इसलिए अल्लाह तआला से यह दुआ की कि ऐ अल्लाह! तू भी मुझ पर हर चीज़ में अपना फ़ज़्ल कर और हर उस चीज़ में जो तेरी पैदा की हुई है और जो मेरे लाभ के लिए है, उसमें भी मेरे लिए भलाई रख दे।

फिर एक दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक दुआ सिखाई। हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने अर्ज किया: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! कौन-सी दुआ सबसे अच्छी है जो मैं नमाज़ में किया करूँ? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम कहो:

अल्लाहुम्मा लकल-हम्दु कुल्लुहू व लकाश-शुक्रु कुल्लुहू व लकल-मुल्कु कुल्लुहू व लकल-खल्कु कुल्लुहू व इलैका यर्जिउल-अम्रु कुल्लुहू नसअलुका मिनल-ख़ैरि व अऊज़ु बिका मिनश्शर्रि कुल्लिही।

ऐ अल्लाह! सारी प्रशंसा तेरे लिए है और सारा शुक्र तेरे लिए है और सारी बादशाहत तेरे लिए है और सारी मखलूक तेरी है और हर मामला तेरी ओर लौटता है। हम तुझसे हर प्रकार की भलाई माँगते हैं और हर प्रकार की बुराई से तेरी पनाह चाहते हैं।

(जम्उल-जवामिअ, जिल्द 15, पृष्ठ 572-571, हदीस 15222, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, 2016 ई.)

खुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अपनी दुआ का उल्लेख एक रिवायत में इस तरह मिलता है। हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी दुआ में कहा करते थे। इसका अनुवाद यह है:

ऐ मेरे रब! मेरी मदद कर और मेरे खिलाफ किसी की मदद न कर। और मेरी सहायता कर और मेरे खिलाफ किसी की सहायता न कर। और मेरे लिए उपाय कर और मेरे खिलाफ उपाय न कर। और मुझे हिदायत दे और मेरी हिदायत मेरे लिए आसान कर दे। और मेरी मदद कर उसके खिलाफ जिसने मेरे साथ या मुझ पर ज़्यादती की।

ऐ अल्लाह! मुझे अपना शुक्रगुजार बना। अपना ज़िक्र करने वाला बना। तुझसे डरने वाला, तेरा आज्ञाकारी, तेरी बहुत अधिक आज्ञा मानने वाला, तेरी ओर बहुत अधिक झुकने वाला बना दे।

ऐ मेरे रब! मेरी तौबा स्वीकार कर और मेरी गलती मिटा दे और मेरी दुआ स्वीकार कर और मेरी दलील को मजबूत कर और मेरे दिल को हिदायत दे और मेरी ज़बान को सीधा कर और मेरे दिल से दुश्मनी और कड़वाहट दूर कर दे।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-वित्र, बाब: मा यक़ूलुर-रजुलु इज़ा सल्लम, हदीस 1510)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सीना और दिल हर चीज़ से साफ और पाक था और पूरी तरह अल्लाह तआला की ओर झुका हुआ था।

यह दुआ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने लिए तो करते थे, लेकिन असल में यह दुआ आपने हमें सिखाई कि मेरे मानने वालों को इस तरह अपने दिल को साफ

रखने के लिए दुआ करनी चाहिए और अल्लाह तआला का फ़ज़ल माँगना चाहिए।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया। एक दुआ है जिसे मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से याद किया है। मैं उसे नहीं छोड़ता और वह दुआ यह है। इसका अनुवाद यह है कि:

ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा बना दे कि मैं तेरा बहुत अधिक शुक्र करूँ, बहुत अधिक तेरा ज़िक्र करूँ, तेरी नसीहत पर अमल करूँ और तेरे ताकीदी आदेशों को याद रखूँ।

(जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुद-दआवात अन रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, बाब [दुआ: अल्लाहुम्मजअल्नी उअज़्ज़िमु शुक्रक...], हदीस 3604)

यदि इंसान यह दुआ रोज़ करे तो फिर गलत तरह के विचार भी पैदा नहीं होंगे। गलत तरह के काम भी इंसान नहीं करेगा। वह वही काम करेगा जिसके करने का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो व्यक्ति किसी ऐसे इंसान को देखे जो किसी आज़माइश में मुब्तला हो और यह दुआ करे तो उसने उस नेमत का शुक्र अदा कर दिया। दुआ के शब्द ये हैं:

सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने मुझे उस आज़माइश से सुरक्षित रखा जिसके द्वारा उसने तुझे आज़माया और मुझे तुझ पर तथा अपनी सारी मखलूक पर श्रेष्ठता दी।

(किताबुश-शुक्र, इब्न अबी अद-दुनिया, पृष्ठ 55, मक्तबतुत-तुरास अल-इस्लामी, 1994 ई.)

किसी को तकलीफ में देखकर यह भी दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसने मुझे इन तकलीफों से सुरक्षित रखा।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब कोई ऐसी चीज़ देखते जो आपको अच्छी लगती तो कहते:

अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी बिनिअमतिही ततिम्मुस्सालिहात।

सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसके फ़ज़ल से सभी नेक काम पूरे होते हैं। और जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसी चीज़ देखते जो आपको पसंद नहीं होती तो कहते:

अल्हम्दुलिल्लाहि अला कुल्लि हाल। हर हालत में सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है।

(सुनन इब्न माजा, किताबुल-अदब, बाब फ़ज़्लिल-हामिदीन, हदीस 3803)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे और हमें बारिश ने आ लिया। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सिर से अपना कपड़ा हटा दिया, यहाँ तक कि आप पर कुछ बारिश पड़ी। हमने कहा: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आपने ऐसा क्यों किया? आपने फ़रमाया:

क्योंकि यह ऊँचे और महान रब की ओर से अभी-अभी आई है।

[(सहीह मुस्लिम, अनुवादित, किताब सलातुल-इस्तिस्का, बाबुद-दुआ फिल-इस्तिस्का, हदीस 1485, जिल्द 4, पृष्ठ 55-54, नूर फाउंडेशन)]

इसके शुक्र के तौर पर मैंने इन बूंदों को लिया है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम बादल से बरसने वाली पहली बूंद के लिए अपना सिर खुला कर देते थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते थे कि हमारे रब अज़्ज़ व जल्ल की ओर से यह नई नेमत आई है और यह सबसे अधिक बरकत वाली है।

(कंज़ुल-उम्माल, जिल्द 1, जुज़ 2, पृष्ठ 267, किताबुल-अज़्कार / किस्मुल-अफ़आल, औक़ातुल-इजाबत, हदीस 4936, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

कोई ऐसा अवसर नहीं था जहाँ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला की शुक्रगुजारी न करते हों, यहाँ तक कि देखने में छोटी से छोटी बात पर भी आपकी शुक्रगुजारी होती थी।

चुनाँचे हज़रत मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब शौचालय से बाहर तशरीफ लाते तो यह दुआ करते:

अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अज़्हबा अन्निल-अज़ा व आफ़ानी।

अर्थात्: सारी प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसने हानिकारक चीज़ को मुझसे दूर कर दिया और मुझे स्वस्थ रखा।

(सुनन इब्न माजा, किताबुत-तहारत, बाब मा यक़ूलु इज़ा खरजा मिनल-खला, हदीस 301)

हज़रत ज़ैद बिन खालिद जुहनी रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत की है। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें हुदैबिया में सुबह की नमाज़ पढ़ाई, जो रात को हुई बारिश के बाद थी। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ से फारिग हुए तो लोगों की ओर अपना चेहरा किया और फ़रमाया:

क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे रब अज़्ज़ व जल्ल ने क्या फ़रमाया है?

लोगों ने कहा: अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बेहतर जानते हैं।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि मेरे बंदों में से आज सुबह कुछ लोग मुझ पर ईमान लाने वाले हुए और कुछ मेरा इनकार करने वाले। जिसने यह कहा कि हम पर अल्लाह तआला के फ़ज़ल और उसकी रहमत से बारिश हुई है, वह मेरा ईमान लाने वाला है और सितारों का इनकार करने वाला है। और जिसने कहा कि हम पर बारिश फलाँ-फलाँ सितारे के निकलने के कारण हुई है, वह मेरा इनकार करने वाला और सितारों पर ईमान रखने वाला है।

[(सहीह अल-बुखारी, किताबुल-अज़ान, बाब यस्तक़बिलुल-इमामुन्नास इज़ा सल्लम, हदीस 846, अनुवादित जिल्द 2, पृष्ठ 248-247, प्रकाशित नज़ारत इशाअत)]

अर्थात् जो अब तक इसी तरह मुझ पर ईमान नहीं लाता तो वह सितारों को पूजने वाला है। अतः

शुक्रगुजारी का असल मापदंड यह है कि हर बात पर केवल और केवल अल्लाह तआला की प्रशंसा की जाए और उसका शुक्र अदा किया जाए।

क्योंकि उस समय कुछ लोगों की अभी पूरी तरह से तरबियत नहीं हुई थी। पुरानी रिवायतों का भी असर था। उनके पुराने पारंपरिक धर्म का भी प्रभाव था। इसलिए वे कह दिया करते थे, सितारों आदि के नाम ले लिया करते थे। तो आपने उन्हें शुक्रगुजारी की हकीकत बताकर फिर इस तरह उनकी तरबियत फरमाई।

एक रिवायत है। जाफर बिन मुहम्मद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आईना देखते तो यह फ़रमाया करते थे:

सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने मुझे पैदा किया और मेरी सूरत अच्छी बनाई तथा मेरे नैतिक गुण भी अच्छे बनाए और मुझमें उन चीज़ों को सुंदर बना दिया जो दूसरों में दोष वाली दिखाई देती हैं।

(किताबुश-शुक्र, इब्न अबी अद-दुनिया, पृष्ठ 54, मक्तबतुत-तुरास अल-इस्लामी, 1994 ई.)

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब कोई चीज़ खाते या पीते तो उसके बाद अल्लाह का शुक्र इस तरह अदा करते थे:

अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अत्अमना व सक़ाना व जअलना मुस्लिमीन।

सारी प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए है जिसने हमें खिलाया और पिलाया और हमें मुसलमान बनाया।

(जामिअ अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुद-दआवात, बाब मा यक़ूलु इज़ा फरग़ा मिनत-तआम, हदीस 3457)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आदत थी कि जब आप खाना खाने से फारिग होते और एक बार हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तरह कहा कि जब आप अपना दस्तरख़ान उठा देते, यानी खाना खाने से फारिग होते, तो आप फरमाते:

अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी कफ़ाना व अरवाना ग़ैर मक्फ़िय्यिन वला मक्फ़ूर।

सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें पर्याप्त दिया और पेट भरकर खिलाया-पिलाया। यह ऐसा शुक्र नहीं जो यहीं पर खत्म हो जाए और न ऐसा शुक्र है जिसकी फिर नाशुक्री की जाए।

और कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह फ़रमाया करते थे:

सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है। ऐ हमारे रब! ऐसा शुक्र नहीं जो यहीं खाने पर खत्म हो जाए और न ऐसा कि फिर न किया जाए और न ऐसा कि जिसकी जरूरत ही न रहे।

ऐ हमारे रब!

[(सहीह अल-बुखारी, किताबुल-अतइमा, बाब मा यक़ूलु इज़ा फरग़ा मिन तआमिही, हदीस 5459, अनुवादित जिल्द 13, पृष्ठ 402-401, प्रकाशित नज़ारत इशाअत)]

शुक्रगुजारी की नसीहत करते हुए आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक रिवायत में इस तरह बयान फ़रमाया है। हज़रत सहल बिन मुआज़ बिन अनस अपने पिता से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने खाना खाया और फिर यह दुआ की:

अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अत्अमनी हाज़त-तआमा व रज़क़नीहि मिन ग़ैरि हौलिन मिन्नी वला क़ुव्वत।

सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने मुझे यह खाना खिलाया और मेरी किसी ताकत और शक्ति के बिना यह मुझे दिया, तो उसके पहले किए गए और बाद में होने वाले गुनाह माफ कर दिए जाएंगे।

इसी तरह आपने फ़रमाया कि जिसने कपड़ा पहना और यह दुआ की:

सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने मुझे यह कपड़ा पहनाया और मेरी किसी ताकत और शक्ति के बिना यह कपड़ा मुझे दिया, तो उसके पहले किए गए और बाद में होने वाले गुनाह माफ कर दिए जाएंगे।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-लिबास, बाब मा यक़ूलु इज़ा लबिस..., हदीस 4023)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। वह कहते हैं कि लोग जब पहला फल देखते तो उसे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लाते। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे लेते तो आप यह दुआ करते:

ऐ अल्लाह! हमारे फलों में हमारे लिए बरकत डाल और हमारे शहर में हमारे लिए बरकत डाल और हमारे साअ में हमारे लिए बरकत डाल और हमारे मुद्द में हमारे लिए बरकत डाल। ऐ अल्लाह! निश्चित रूप से इब्राहीम तेरे बंदे, तेरे दोस्त और तेरे नबी थे। उन्होंने तुझसे मक्का के लिए दुआ की थी और मैं तुझसे मदीना के लिए उसी तरह दुआ करता हूँ जिस तरह उन्होंने मक्का के लिए दुआ की थी और उसके जैसी एक और दुआ भी करता हूँ।

रावी कहते हैं कि फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सबसे छोटे बच्चे को बुलाते और वह फल उसे दे देते।

[(सहीह मुस्लिम, अनुवादित, किताबुल-हज, बाब फ़ज़्लिल-मदीना व दुआइन-नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम..., हदीस 2423, जिल्द 6, पृष्ठ 338, नूर फाउंडेशन, रब्वा)]

बच्चों को सबसे पहले फल देते थे जो नया फल आता था।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब रात को अपने बिस्तर पर लेटते तो आप अपना हाथ अपने गाल के नीचे रखते और फिर दुआ करते:

अल्लाहुम्मा बिस्मिक अमूतु व अह्या।

ऐ अल्लाह! तेरे ही नाम से मैं मरता हूँ और जीता हूँ।

जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जागते तो दुआ करते:

अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बअदा मा अमातना व इलैहिन-नुशूर।

सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें मौत देने के बाद जीवित किया और उसी की ओर उठकर जाना है।

[(सहीह अल-बुखारी, किताबुद-दआवात, बाब वज़्अिल-यद तहतल-खद्दिल-यमीनी, हदीस 6314, जिल्द 15, पृष्ठ 27, प्रकाशित नज़ारत इशाअत)]

एक दूसरी रिवायत में जागने की दुआ इस तरह बयान हुई है। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात में जागते तो फरमाते:

सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने मुझे मौत देने के बाद जीवित किया और उसी की ओर उठकर जाना है।

शेष पृष्ठ 4 पर

पृष्ठ 12 का शेष

जाती हैं।"

शाह अब्दुल क़ादिर साहब लिखते हैं कि मुझे कई बार अल्लाह तआला का दर्शन अपने पिता के रूप में हुआ। इसी प्रकार शाह साहब कहते हैं कि एक बार मुझे अल्लाह तआला का दर्शन हुआ और अल्लाह तआला ने मुझे हल्दी की एक गाँठ दी और फ़रमाया, "यह मेरी पहचान (मारिफ़त) है, इसे संभालकर रखना।"

जब वे जागे तो हल्दी की वह गाँठ वास्तव में उनकी मुट्ठी में मौजूद थी।

एक अन्य बुज़ुर्ग, जिनका नाम हज़रत ने नहीं बताया, तहज्जुद के समय अपने कमरे में मुसल्ले पर बैठे इबादत कर रहे थे। उन्होंने कश्फ़ में देखा कि कोई व्यक्ति बाहर से आया और उनके नीचे से मुसल्ला निकालकर ले गया। जब वे जागे तो देखा कि वास्तव में मुसल्ला उनके नीचे नहीं था। जब दिन निकलने पर कमरे से बाहर आए तो देखा कि मुसल्ला आँगन में पड़ा हुआ है।

ये घटनाएँ सुनाने के बाद हज़रत साहब ने फ़रमाया: "ये सब कश्फ़ की बातें थीं, लेकिन अल्लाह तआला ने उन बुज़ुर्गों की करामत प्रकट करने के लिए उन्हें बाहरी रूप में भी प्रकट कर दिया।" फिर फ़रमाया: "अब हमारी घटना सुनो।"

"जब तुम कमरे में हमारे पाँव दबा रहे थे, उस समय मैंने देखा कि एक बहुत विशाल और अत्यंत स्वच्छ भवन है। उसमें एक पलंग बिछा हुआ है और उस पर एक व्यक्ति शासक (हाकिम) के रूप में बैठा है। मेरे दिल में डाला गया कि ये अहकमुल हाकिमीन, अर्थात रब्बुल आलमीन हैं। और मैं अपने आपको ऐसा समझता हूँ जैसे किसी शासक का कोई निकट संबंधी होता है।"

"मैंने तक़दीर और अल्लाह के फ़ैसलों (क़ज़ा व क़दर) के संबंध में कुछ आदेश लिखे थे और उन्हें हस्ताक्षर कराने के लिए उनके पास ले गया।"

"जब मैं उनके पास पहुँचा तो उन्होंने अत्यंत प्रेम और स्नेह के साथ मुझे अपने पास पलंग पर बिठा लिया। उस समय मेरी ऐसी अवस्था हो गई जैसे कोई बेटा वर्षों बाद अपने पिता से मिल जाए और उसका हृदय भर आए।" या शायद फ़रमाया, "उसका दिल पिघल जाए।"

"उस समय मेरे मन में यह विचार भी आया कि ये अहकमुल हाकिमीन, अर्थात रब्बुल आलमीन हैं, और कितने प्रेम और स्नेह से उन्होंने मुझे अपने पास बिठा लिया है।"

"इसके बाद मैंने वे आदेश उनके सामने हस्ताक्षर के लिए प्रस्तुत किए। उन्होंने पास रखी लाल स्याही की दवात में कलम डुबोई, फिर मेरी ओर झटका और उन पर हस्ताक्षर कर दिए।"

मियाँ अब्दुल्लाह साहब कहते हैं कि हज़रत साहब ने कलम झटकने और हस्ताक्षर करने की क्रियाएँ अपने हाथ से करके भी दिखाईं कि उन्होंने इस प्रकार किया था।

फिर हज़रत साहब ने फ़रमाया: "यही वह लाल रंग है जो उस कलम से निकला है।"

फिर फ़रमाया: "देखो, कोई बूंद तुम्हारे ऊपर भी तो नहीं गिरी?"

मैंने अपना कुर्ता इधर-उधर से देखकर अर्ज़ किया, "हज़ूर! मेरे ऊपर तो कोई बूंद नहीं गिरी।" आपने फ़रमाया: "अपनी टोपी देखो।"

उन दिनों मेरे सिर पर सफेद मलमल की टोपी रहती थी। मैंने टोपी उतारकर देखी तो उस पर भी लाल रंग की एक बूंद थी। मुझे बहुत खुशी हुई और मैंने अर्ज़ किया, "हज़ूर! मेरी टोपी पर भी एक बूंद है।" फिर मेरे मन में इच्छा हुई कि यह कुर्ता बहुत मुबारक है, इसे तबर्रुक (आशीर्वाद स्वरूप स्मृति) के रूप में मुझे मिल जाना चाहिए। पहले मैंने इस विचार से कि कहीं हज़रत तुरंत मना न कर दें, एक धार्मिक प्रश्न पूछा।

मैंने अर्ज़ किया, "हज़ूर! किसी बुज़ुर्ग की कोई तबर्रुक वाली चीज़, जैसे कपड़ा आदि, संभालकर रखना जायज़ है?" आपने फ़रमाया, "हाँ, जायज़ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के तबर्रुकात सहाबा ने संभालकर रखे थे।" फिर मैंने अर्ज़ किया, "हज़ूर! अल्लाह के वास्ते मेरी एक विनती है।" फ़रमाया, "कहो, क्या है?" मैंने अर्ज़ किया, "हज़ूर! यह कुर्ता तबर्रुक के रूप में मुझे दे दीजिए।"

आपने फ़रमाया, "नहीं, यह हम नहीं देंगे।" मैंने अर्ज़ किया, "हज़ूर! अभी तो आपने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के तबर्रुकात सहाबा ने रखे थे।"

इस पर आपने फ़रमाया: "मैं यह कुर्ता इसलिए नहीं देता कि मेरे और तुम्हारे मरने के बाद इससे शिर्क फैल जाएगा। लोग इसकी पूजा करने लगेंगे। लोग इसे ज़ियारत की वस्तु बना लेंगे।" मैंने अर्ज़ किया, "हज़ूर! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के तबर्रुकात से तो शिर्क नहीं फैला।" आपने फ़रमाया: "मियाँ अब्दुल्लाह! वास्तव में बात यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जो तबर्रुकात जिन सहाबा के पास थे, वे मरते समय वसीयत कर गए थे कि उन तबर्रुकात को उनके कफ़न के साथ दफ़न कर दिया जाए। इसलिए ऐसा ही किया गया। जिस सहाबी के पास जो तबर्रुक था, उसे उनके कफ़न के साथ दफ़न कर दिया गया।" मैंने अर्ज़ किया, "हज़ूर! मैं भी मरते समय वसीयत कर जाऊँगा कि यह कुर्ता मेरे कफ़न के साथ दफ़न कर दिया जाए।" आपने फ़रमाया: "हाँ, यदि तुम ऐसा वादा करते हो तो ले लो।" चूँकि वह शुक्रवार का दिन था, थोड़ी देर बाद हज़रत ने गुस्ल किया और कपड़े बदले। तब मैंने यह कुर्ता संभाल लिया। मियाँ अब्दुल्लाह साहब बयान करते हैं कि अभी हज़रत ने यह कुर्ता पहना ही हुआ था कि आसपास से आए हुए दो-तीन मेहमानों से मैंने इस निशान का ज़िक्र किया। वे फिर हज़रत साहब के पास आए और अर्ज़ किया, "मियाँ अब्दुल्लाह ने हमसे ऐसी बात कही है।" हज़रत ने फ़रमाया, "हाँ, ठीक है।"

फिर उन्होंने कहा, "हज़ूर! यह कुर्ता हमें दे दीजिए। हम सब इसे बाँट लेंगे, क्योंकि इसमें हम सबका भी अधिकार है।" हज़रत साहब ने फ़रमाया, "हाँ, ले लेना।" लेकिन उनसे कोई शर्त या वचन नहीं लिया। उस समय मुझे बहुत चिंता हुई कि यह निशानी मेरे हाथ से चली जाएगी। मेरे मन में बड़ी बेचैनी पैदा हुई। इसलिए मैंने अर्ज़ किया: "हज़ूर! अब इस कुर्ते पर आपका कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि यह अब मेरी मिल्कियत हो चुका है। अब मेरा अधिकार है कि मैं इन्हें दूँ या न दूँ, क्योंकि मैं इसे आपसे ले चुका हूँ।" इस पर हज़रत मुस्कराकर फ़रमाने लगे: "हाँ, यह तो मियाँ अब्दुल्लाह हमसे ले चुके हैं। अब इनका अधिकार है कि तुम्हें दें या न दें।" फिर उन लोगों ने मुझसे बहुत आग्रह किया, लेकिन मैंने देने से इनकार कर दिया। मियाँ अब्दुल्लाह साहब फ़रमाते हैं कि आज तक उस कुर्ते पर लाल रंग के वे दाग़ उसी प्रकार मौजूद हैं। उनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। उस कुर्ते के कपड़े को पंजाबी में "नीनो" कहा जाता है। हज़रत ने यह कुर्ता सात दिन तक पहना था।

मैं पहले यह कुर्ता लोगों को नहीं दिखाया करता था, क्योंकि हज़रत के ये शब्द कि "इस कुर्ते को लोग ज़ियारत की चीज़ न बना लें" हमेशा मुझे याद रहते थे।

लेकिन लोग इसे देखने की बहुत इच्छा करते थे और मुझे बहुत आग्रह करने लगे। तब मैंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय से इसका उल्लेख किया कि हज़रत साहब के इन शब्दों के कारण मुझे यह कुर्ता दिखाने में संकोच होता है, लेकिन लोग बहुत आग्रह करते हैं। अब क्या किया जाए? हज़रत मियाँ साहब ने फ़रमाया: "इसे ख़ूब दिखाया करो, बार-बार दिखाओ, ताकि इसे देखने वाले गवाह बहुत अधिक हो जाएँ और हमारी जमाअत का हर व्यक्ति कह सके कि 'मैंने भी देखा है, मैंने भी देखा है, मैंने भी देखा है।'" या शायद "मैंने" के स्थान पर "हमने" शब्द फ़रमाए। इसके बाद मैं लोगों को दिखाने लगा। लेकिन आज भी मैं यह कुर्ता केवल उसी व्यक्ति को दिखाता हूँ जो स्वयं इच्छा करता है। अपने आप किसी को दिखाना मुझे अच्छा नहीं लगता, क्योंकि हज़रत साहब के वे शब्द आज भी मेरे दिल पर अंकित हैं। और हर यात्रा में मैं इस कुर्ते को अपने साथ रखता हूँ, इस विचार से कि पता नहीं कहाँ मृत्यु आ जाए। ख़ाकसार निवेदन करता है कि मैंने यह कुर्ता स्वयं देखा है। उस लाल रंग का रंग हल्का, अर्थात गुलाबी जैसा है। और मुझे मियाँ अब्दुल्लाह साहब से मालूम हुआ है कि यह रंग शुरू से ही ऐसा चला आ रहा है। (साथ ही रिवायत संख्या 436 भी देखिए।)

★ ★ ★

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

हिजरत के चौथे वर्ष अरब के दो क़बीले 'अज़ल' और क़ारह ने अपने प्रतिनिधि मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास भेजकर सन्देश दिया कि हमारे क़बीलों में बहुत से लोग इस्लाम की ओर झुकाव रखते हैं और अनुरोध किया कि कुछ व्यक्ति जो इस्लामी शिक्षा में पारंगत हों भेज दिए जाएं ताकि वे उनके मध्य रह कर उन्हें इस नए धर्म की शिक्षा दें। वास्तव में यह एक षड्यंत्र था जो इस्लाम के कट्टर शत्रु बनू लहयान ने रचा था। उनका उद्देश्य यह था कि जब ये प्रतिनिधि मुसलमानों को लेकर आएं तो वे उनका वध करके अपनी ओर से सुफ़यान बिन ख़ालिद का प्रतिशोध लेंगे। अतः उन्होंने अज़ल और क़ारह के प्रतिनिधि कुछ मुसलमानों को अपने साथ लाने के उद्देश्य से पुरस्कार के बड़े-बड़े वादे देकर मुहम्मद (स.अ.व.) की सेवा में भेजे थे। जब 'अज़ल' और 'क़ारह' के लोगों ने मुहम्मद रसूलुल्लाह के पास पहुँच कर निवेदन किया तो आप[स.] ने उनकी बात पर विश्वास करके दस मुसलमानों को उनके साथ भेज दिया कि उन लोगों को इस्लाम की आस्थाओं और सिद्धान्तों की शिक्षा दें। जब यह दल बनू लहयान के क्षेत्र में पहुँचा तो अज़ल और क़ारह के लोगों ने बनू लहयान को सूचना पहुँचा दी और उन्हें सन्देश दिया कि या तो मुसलमानों को बन्दी बना लें या मौत के घाट उतार दें। इस घिनौने षड्यंत्र के अन्तर्गत बनू लहयान के दो सौ सशस्त्र लोग मुसलमानों का पीछा करने के लिए निकल खड़े हुए तथा 'रजीह' के स्थान में आकर उन्हें घेर लिया। दस मुसलमानों और दो सौ शत्रुओं के मध्य युद्ध हुआ। मुसलमानों के हृदय ईमान के प्रकाश से परिपूर्ण थे और शत्रु इस ईमान से खाली थे। दस मुसलमान एक टीले पर चढ़ गए और दो सौ लोगों को मुकाबले के लिए ललकारा। शत्रु ने धोखा देकर उन्हें बन्दी बनाना चाहा कि यदि तुम नीचे उतर आओ तो तुम से कुछ न कहा जाएगा, परन्तु मुसलमानों के अमीर ने कहा कि हम काफ़िरों के वादों और वचनों को भली-भांति देख चुके हैं। तत्पश्चात् उन्होंने आकाश की ओर मुख उठा कर कहा हे ख़ुदा ! तू हमारी परिस्थिति को देख रहा है, अपने रसूल को हमारी इस परिस्थिति की सूचना पहुँचा दे। जब काफ़िरों ने देखा कि मुसलमानों की इस छोटी सी जमाअत पर उनकी बातों का कोई प्रभाव नहीं होता तो उन्होंने उन पर आक्रमण कर दिया और मुसलमान निर्भयतापूर्वक उन से लड़ते रहे यहाँ तक कि दस में से सात शहीद हो गए, शेष तीन जो बच गए थे उन्हें काफ़िरों ने पुनः वादा दिया कि हम तुम्हारे प्राण बचा लेंगे इस शर्त पर कि तुम टीले से नीचे उतर आओ, परन्तु जब वे काफ़िरों के वादे वर विश्वास करके नीचे उतर आए तो काफ़िरों ने उन्हें अपने धनुषों की प्रत्यंचाओं से जकड़ कर बांध लिया। इस पर उनमें से एक ने कहा कि यह पहली अवज्ञा है जो तुम अपने समझौते के बारे में कर रहे हो। अल्लाह ही जानता है कि तुम इसके पश्चात् क्या करोगे। यह कह कर उसने उन के साथ जाने से इन्कार कर दिया। काफ़िरों ने उसे मारना और घसीटना आरम्भ कर दिया, परन्तु अन्ततः उसके मुकाबले और उसके साहस से इतने निराश हो गए कि उन्होंने उसका वहीं वध कर दिया। शेष दो को वे साथ ले गए तथा उन्हें मक्का के क़ुरैश के हाथ दास के रूप में बेच दिया, उनमें से एक का नाम ख़ुबैब[रज़ि.] था और दूसरे का नाम ज़ैद। ख़ुबैब का ख़रीदार अपने बाप का बदला लेने के लिए जिसका ख़ुबैब ने बदर के युद्ध में वध किया था ख़ुबैब[रज़ि.] का वध करना चाहता था। एक दिन ख़ुबैब[रज़ि.] ने अपनी आवश्यकता हेतु उस्तरा मांगा, उस्तरा ख़ुबैब[रज़ि.] के हाथ में था कि घर वालों का एक बच्चा खेलता हुआ उसके पास चला गया। ख़ुबैब ने उसे उठा कर अपनी जांघ पर बैठा लिया। बच्चे की मां ने जब यह दृश्य देखा तो भयभीत हो गई और उसे विश्वास हो गया कि अब ख़ुबैब बच्चे का वध कर देगा क्योंकि वे कुछ दिनों मैं ख़ुबैब का वध करने वाले थे। उस समय उस्तरा उसके हाथ में था और बच्चा उसके इतना निकट था कि वह उसे हानि पहुँचा सकता था। ख़ुबैब[रज़ि.] ने उस बच्चे की मां के चेहरे से उसकी व्याकुलता को भांप लिया और कहा कि तुम सोचती हो कि मैं तुम्हारे बच्चे का वध कर दूंगा। यह विचार हृदय में कदापि न लाओ, मैं ऐसा कुकृत्य कभी नहीं कर सकता, मुसलमान धोखेबाज़ नहीं होते। वह महिला ख़ुबैब[रज़ि.] की इस ईमानदारी और उचित बात से बहुत प्रभावित हुई। उसने इस बात को सदैव स्मरण रखा और हमेशा कहा करती थी कि हम ने ख़ुबैब[रज़ि.] सा क़ैदी कोई नहीं देखा।

अन्त में मक्का वाले ख़ुबैब[रज़ि.] को एक खुले मैदान में ले गए ताकि उस का वध करके हर्षोल्लास का उत्सव मनाएं। जब उनके वध का समय आ पहुँचा तो ख़ुबैब[रज़ि.] ने कहा मुझे दो रकअत नमाज़ पढ़ लेने दो। क़ुरैश ने यह बात स्वीकार कर ली और ख़ुबैब ने सब लोगों के सामने इस संसार में अन्तिम बार अपने अल्लाह की उपासना की। जब वह नमाज़ समाप्त कर चुके तो उन्होंने कहा मैं अपनी नमाज़ जारी रखना चाहता था परन्तु इस विचार से समाप्त कर दी कि कहीं तुम यह न समझो कि मैं मरने से डरता हूँ फिर आराम से अपना सर वध करने वाले के सामने रख दिया और ऐसा करते हुए ये शे'र पढ़े

وَلَسۡتُ اُبَالِیۡ حِیۡنَ اُقۡتَلُ مُسۡلِمًا
عَلٰٓی اَیِّ جَنۡبٍ کَانَ لِلّٰہِ مَصۡرَعِی
وَذٰلِکَ فِیۡ ذَاتِ الۡاِلٰہِ وَاِنۡ یَّشَاء
یُبَارِکۡ عَلٰٓی اَوۡصَالِ شِلۡوٍ مُمَزَّعِ

अर्थात् जब कि मुसलमान होने की अवस्था में मेरा वध किया जा रहा है तो मुझे परवाह नहीं है कि मेरा वध हो कर मैं किस पहलू पर गिरूँ। यह सब कुछ ख़ुदा के लिए है और यदि मेरा ख़ुदा चाहेगा तो मेरे शरीर के कटे हुए भागों पर बरकत उतारेगा।

ख़ुबैब ने अभी ये शे'र समाप्त न किए थे कि जल्लाद की तलवार उनकी गर्दन पर पड़ी और उन का सर धरती पर आ गिरा। जो लोग यह उत्सव मनाने के लिए एकत्र हुए थे उन में से एक व्यक्ति सईद बिन आमिर भी था जो बाद में मुसलमान हो गया। कहते हैं जब कभी ख़ुबैब[रज़ि.] के वध की चर्चा सईद के सामने होती तो वह बेहोश हो जाया करता था।

दूसरा क़ैदी ज़ैद भी वध करने के लिए बाहर ले जाया गया। इस तमाशे को देखने वालों में मक्का का सरदार अबू सुफ़यान भी था। वह ज़ैद से सम्बोधित हुआ और पूछा कि क्या तुम पसन्द नहीं करते कि तुम्हारे स्थान पर मुहम्मद[स.] हो और तुम अपने घर में आराम से बैठे हो। ज़ैद ने बड़े क्रोध की मुद्रा में उत्तर दिया अबू सुफ़यान ! तुम क्या कहते हो ख़ुदा की क़सम मेरे लिए मरना इस से उत्तम है कि मुहम्मद (स.अ.व.) के पैर में मदीना की गलियों में एक कांटा भी चुभ जाए[2]। श्रद्धासिक्त त्याग की इस संभावना को देखकर अबू सुफ़यान प्रभावित हुए बिना न रह सका और उसने आश्चर्यपूर्वक ज़ैद की ओर देखा और तुरन्त ही दबे शब्दों में कहा कि ख़ुदा गवाह है कि जिस प्रकार मुहम्मद (स.अ.व.) के साथ मुहम्मद (स.अ.व.) के साथी प्रेम करते हैं मैंने नहीं देखा कि इस तरह कोई अन्य व्यक्ति किसी से प्रेम करता है।

क़ुर्आन के सत्तर हाफ़िज़ों (कंठस्थ कर्ताओं) के वध की नृशंस घटना

लगभग इन्हीं दिनों के आस-पास नजद के कुछ लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास आए ताकि उनके साथ कुछ मुसलमान भेज दिए जाएं जो उन्हें इस्लाम की शिक्षा दें। आप[स.] ने उनका विश्वास न किया परन्तु अबूबरा ने जो उस समय मदीना में थे कहा कि मैं इस क़बीले की ओर से उत्तरदायी बनता हूँ और मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को विश्वास दिलाया कि वे कोई उपद्रव नहीं करेंगे। इस पर आप (स.अ.व.) ने सत्तर मुसलमानों को जो क़ुर्आन के हाफ़िज़ (कंठस्थ करने वाले) थे इस कार्य के लिए चुना। जब यह दल 'बेर-ए-मऊना' पर पहुँचा तो उनमें से एक व्यक्ति हराम बिन मल्हान[रज़ि.] आमिर क़बीले के सरदार के पास गया जो 'अबू बरा' का भतीजा था ताकि उसे इस्लाम का सन्देश दे। प्रत्यक्ष तौर पर कबीले वालों ने 'हराम' का भली प्रकार स्वागत गिया परन्तु जिस समय वह सरदार के सामने भाषण दे रहे थे तो एक व्यक्ति छुप कर पीछे से आया और उन पर भाले से प्रहार किया। हराम का वहीं अन्त हो गया। जब बर्छा उनके गले से पार हुआ तो वह कहते हुए सुने गए कि اَللّٰہُ اَکۡبَرُ فزتُ بِرَبِّ الکعبة अर्थात् अल्लाहो अकबर। का'बे के रब्ब की क़सम मैं अपनी मनोकामना को पहुँच गया।

इस धोखेबाज़ी से 'हराम' का वध करने के पश्चात् क़बीले के सरदारों ने क़बीले वालों को उत्तेजित किया कि शिक्षकों के शेष दल पर भी आक्रमण करें परन्तु क़बीले वालों ने कहा कि हमारे सरदार 'अबू बरा' ने उत्तरदायित्व स्वीकार किया है, हम उस दल पर आक्रमण नहीं कर सकते। उस कबीले के सरदारों ने उन दो कबीलों की सहायता के साथ जो मुसलमान शिक्षकों को लेने गए थे, शिक्षकों के दल पर आक्रमण कर दिया। उनका यह कहना कि हम उपदेशक हैं, इस्लाम की शिक्षा देने आए हैं युद्ध करने नहीं आए; बिल्कुल काम न आया तथा काफ़िरों ने मुसलमानों का वध करना आरम्भ कर दिया। केवल तीन लोगों के अतिरिक्त सब शहीद हो गए। इस दल में एक लंगड़ा व्यक्ति भी था जो लड़ाई से पूर्व पहाड़ी पर चढ़ गया था तथा दो व्यक्ति ऊँट चराने के लिए जंगल की ओर गए हुए थे। वापसी पर उन्होंने देखा कि उनके छियासठ साथियों के शव मैदान में पड़े हैं। दो ने आपस में परामर्श किया। एक ने कहा हमें चाहिए कि हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) की सेवा में उपस्थित हो कर इस घटना की सूचना दें। दूसरे ने कहा जहाँ हमारे दल का सरदार जिसे मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने हमारा अमीर नियुक्त किया था का वध किया गया है मैं इस स्थान को

छोड़ नहीं सकता। यह कहते हुए वह अकेला काफ़िरों पर टूट पड़ा और लड़ता हुआ मारा गया तथा दूसरे को बन्दी बना लिया गया परन्तु बाद में एक शपथ की बुनियाद पर जो क़बीले के एक सरदार ने खाई थी छोड़ दिया गया। मारे जाने वालों में आमिर-बिन फ़ुहैरा का नाम भी था जो हज़रत अबूबकर[रज़ि.] के आज़ाद किए हुए दास थे, उन का वध करने वाला एक व्यक्ति जब्बार बिन सलमा था जो बाद में मुसलमान हो गया। जब्बार कहा करता था कि आमिर का वध ही मेरे मुसलमान होने का कारण बना था। जब्बार कहता है कि जब मैं आमिर का वध करने लगा तो मैंने आमिर को यह कहते हुए सुना فُزْتُ والله ख़ुदा की क़सम मैंने अपनी मनोकामना को पा लिया। तत्पश्चात् मैंने एक व्यक्ति से पूछा, जब मुसलमान मृत्यु का सामना करता है तो वह ऐसी बातें क्यों करता है? उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि मुसलमान ख़ुदा के मार्ग में मृत्यु को श्रेष्ठ पुरस्कार और विजय समझता है। 'जब्बार' पर इस उत्तर का इतना प्रभाव हुआ कि उसने इस्लाम का नियमित रूप से अध्ययन करना आरम्भ कर दिया और फलस्वरूप इस्लाम धर्म स्वीकार करके मुसलमान हो गया। इन दो हृदय-विदारक घटनाओं की सूचना जिसमें लगभग अस्सी मुसलमान एक सुनश्चित षड्यंत्र के परिणामस्वरूप शहीद हो गए थे मदीना पहुँच गई। शहीद होने वाले कोई साधारण व्यक्ति न थे अपितु क़ुर्आन के हाफ़िज़ थे। उन्होंने कोई अपराध नहीं किया था, न किसी को कष्ट पहुँचाया था, न ही किसी युद्ध में भागीदार बने थे अपितु ख़ुदा और धर्म के नाम पर झूठी दुहाई दे कर धोखे से शत्रु के सुपुर्द कर दिए गए थे। इन वीभत्स घटनाओं से असंदिग्ध रूप से सिद्ध होता है कि विरोधियों को इस्लाम से कठोर शत्रुता थी। इसके विपरीत इस्लाम के प्रति मुसलमानों की अगाध श्रद्धा एवं सुदृढ़ आस्था थी।

बनी मुस्तलिक़ का युद्ध

उहद के युद्धोपरान्त मक्का में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। मक्का वालों को हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) से जो शत्रुता थी और आप[स.] के विपरीत लोगों में घृणा फैलाने के लिए देश भर में जो उपाय कर रहे थे उनकी परवाह न करते हुए मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने इस विकट संकट के समय में मक्का के निर्धनों की सहायता के लिए धन राशि एकत्र की परन्तु इस भलाई का भी मक्का वालों पर कुछ प्रभाव न हुआ तथा उनकी शत्रुता में कुछ अन्तर न आया अपितु वे शत्रुता में और भी बढ़ गए। ऐसे क़बीले भी जो इस से पूर्व मुसलमानों के साथ सहानुभूति का व्यवहार करते थे शत्रु बन गए। उन कबीलों में से एक क़बीला बनी मुस्तलिक़ का था; मुसलमानों के साथ उनके संबंध अच्छे थे, परन्तु अब उन्होंने मदीना पर आक्रमण करने की तैयारी आरम्भ कर दी। जब हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) को उन की तैयारी का ज्ञान हुआ तो आपने वस्तु स्थिति मालूम करने के लिए कुछ लोग भेजे जिन्होंने वापस आकर उन सूचनाओं को सच बताया। इस पर हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने निर्णय किया कि स्वयं जाकर इस नए आक्रमण का सामना करें। अतः आप ने एक सेना तैयार की तथा उसे लेकर बनू मुस्तलिक की ओर गए। जब मुसलमानों की सेना का शत्रुओं से सामना हुआ तो हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने प्रयास किया कि शत्रु युद्ध किए बिना पीछे हट जाने पर तैयार हो जाए, परन्तु उन्होंने इन्कार किया। अतः युद्ध हुआ और कुछ ही घंटों में शत्रु को पराजय का मुख देखना पड़ा।

चूंकि मक्का के काफ़िर मुसलमानों को हानि पहुँचाने पर तुले हुए थे तथा मित्र क़बीले भी शत्रु बन रहे थे इसलिए उन धोखेबाज़ों ने भी जो मुसलमानों के अन्दर मौजूद थे इस अवसर पर साहस किया कि वे मुसलमानों की ओर से युद्ध में भाग लें। कदाचित् उन का विचार था कि इस प्रकार उन्हें मुसलमानों को हानि पहुँचाने का अवसर प्राप्त हो जाएगा बनू मुसतलिक के साथ छेड़ा गया युद्ध कुछ ही घंटों में समाप्त हो गया। अतः इस युद्ध के मध्य मुनाफ़िक लोगों को उपद्रव करने का अवसर प्राप्त न हो सका परन्तु हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने निर्णय किया कि बनू मुस्तलिक़ की बस्ती में कुछ दिन ठहरें। आपके अस्थायी तौर पर ठहरने के समय एक मक्का निवासी मुसलमान का एक मदीना निवासी मुसलमान से कुएं से पानी निकालने के संबंध में झगड़ा हो गया। संयोग से यह मक्का निवासी एक आज़ादी प्राप्त दास था, उसने मदीने वाले व्यक्ति को मारा जिस पर उस मदीनावासी ने अन्सार (मदीना वाले मुसलमान) को पुकारा और मक्कावासी ने मुहाजिरों (मक्का के प्रवासी) को पुकारा और इस प्रकार परस्पर उपद्रव फैल गया। किसी ने यह मालूम करने का प्रयास न किया कि मूल घटना क्या है। दोनों ओर से युवकों ने तलवारें निकाल लीं। अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल ने समझा कि ऐसा अवसर ख़ुदा की ओर से मिल गया है। उसने चाहा कि आग पर तेल डाले। उसने मदीना वालों को सम्बोधित करके कहा कि इन मुहाजिरों पर तुम्हारी सहानुभूति सीमा से अधिक बढ़ गई है और तुम्हारे सद्व्यवहार से इनके सर फिर गए हैं और ये दिन प्रतिदिन तुम्हारे सर चढ़ते जाते हैं। निकट था कि इस भाषण का वही प्रभाव होता जो अब्दुल्लाह चाहता था और झगड़ा बढ़ जाता परन्तु ऐसा न हुआ। अब्दुल्लाह ने अपने उपद्रवपूर्ण भाषण का अनुमान लगाने में ग़लती की थी तथा

शेष ..

★ ★ ★

पृष्ठ 11 का शेष के विचार से उत्साहित और बेचैन रहा। यहाँ तक कि सप्ताहांत (weekend) में मैंने अपने एक परिचित अहमदी को अपने कार्यालय बुलाया ताकि मैं उनसे यह सीख सकूँ कि हुज़ूर अनवर से मिलने का सही तरीका क्या है, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि उनके सम्मान में मुझसे कोई कमी रह जाए।

मुख्य कार्यक्रम शुरू होने से पहले हुई मुलाक़ात में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि कमरे को कुछ ज़्यादा ही सजाया गया है। लेकिन सच तो यह है कि हुज़ूर जैसी महान हस्ती के लिए ऐसा ही होना चाहिए था। इतने बड़े नेता के लिए कोई छोटा और साधारण कमरा उचित नहीं लगता।"

: ... Dr Roger Noakes भी इस समारोह में उपस्थित थे। उन्होंने कहा:

"हुज़ूर अनवर का इतनी दूर से ऑस्ट्रेलिया आना और हमें मुलाक़ात का सम्मान देना एक असाधारण बात है। आपका आकर्षक संदेश ज्ञान और विवेक से भरपूर था। आपके संदेश में शांति थी। आप सबको हुज़ूर अनवर का ख़याल रखना चाहिए। हम उन्हें हमेशा स्वस्थ और सुरक्षित देखना चाहते हैं क्योंकि वे एक अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्तित्व हैं।"

: ... पुलिस कमिश्नर Ian Stewart ने कहा:

"हुज़ूर अनवर के भाषण से हमने यह सीखा कि यदि हम दुनिया में शांति चाहते हैं तो हममें से प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से ज़िम्मेदारी उठानी होगी और अपना-अपना योगदान देना होगा।"

उन्होंने आगे कहा कि :

"ऐसे व्यक्ति का यहाँ उपस्थित होना, जो दो सौ से अधिक देशों में फैले एक समुदाय का नेतृत्व कर रहा है, अपने आप में आश्चर्यजनक है। वास्तव में यह हमारे लिए एक असाधारण अवसर है।

हुज़ूर अनवर का संदेश और उनकी सोच बिल्कुल वैसी ही है जैसी मैं स्वयं सोचता हूँ। मेरे विचार में पुलिस व्यवस्था भी इसी सिद्धांत पर चलनी चाहिए। आज की शाम अत्यंत शानदार रही। हमें अहमदिया मुस्लिम जमाअत पर बहुत गर्व है।"

: ... Michael Pucci MP भी इस समारोह में शामिल हुए। उन्होंने कहा :

"यह इस क्षेत्र के इतिहास का एक बहुत बड़ा अवसर था। हुज़ूर अनवर का यहाँ आना हमारे लिए सम्मान की बात है। उनका व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली और ज्ञान से भरपूर है।"

: ... Chambers of Commerce के अध्यक्ष Laurie Konsaki ने कहा :

"हुज़ूर अनवर का यह संदेश कि हम सभी को एक-दूसरे के साथ प्रेम और करुणा से रहना चाहिए, मुझे बहुत पसंद आया। उनकी यह बात भी मुझे बहुत अच्छी लगी कि यदि आप दूसरों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं, तो मस्जिद में आकर इबादत करना बिल्कुल निरर्थक है।

यह शांति का अत्यंत सकारात्मक संदेश था। हुज़ूर अनवर और सभी अहमदी मित्र बहुत ही स्नेह और अपनापन से मिलने वाले लोग हैं। यह नई मस्जिद हमारे क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण और स्वागतयोग्य उपलब्धि है। यदि हुज़ूर अनवर स्थायी रूप से ऑस्ट्रेलिया में रहना चाहें, तो उनका पूरे दिल से स्वागत किया जाएगा।"

: ... Stephen Nuske, जो एक पादरी हैं, उन्होंने कहा :

"आज शाम इतना उत्कृष्ट संदेश देने के लिए मैं हुज़ूर अनवर का धन्यवाद करता हूँ। हमें आप जैसे और लोगों की आवश्यकता है और आपके विचार तथा संदेश को फैलाने के लिए भी अधिक लोगों की आवश्यकता है।"

: ... एक अतिथि Dr John Kanyani ने कहा :

"आज रात यहाँ आने से पहले मैं बहुत घबराया हुआ था क्योंकि मैं मुसलमान नहीं हूँ और मुझे नहीं पता था कि मेरे साथ कैसा व्यवहार किया जाएगा। लेकिन हुज़ूर अनवर मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने मेरी सारी घबराहट दूर कर दी।

हुज़ूर अनवर एक विश्व नेता हैं, इसलिए मुझे उनसे एक उत्कृष्ट भाषण की अपेक्षा थी। वास्तव में मेरी सभी अपेक्षाएँ पूरी हुईं और उनका संबोधन अत्यंत असाधारण था।

मैं यह भी कहना चाहूँगा कि आज तक मैं जितने भी लोगों से मिला हूँ, उनमें हुज़ूर अनवर मुझे सबसे अधिक सच्चे और ईमानदार व्यक्ति लगे।"

: ... एक अतिथि David Gardner ने कहा :

"हुज़ूर अनवर का भाषण बहुत स्पष्ट था। आपके संदेश में पूरी दुनिया के लिए आशा की एक नई किरण थी।"

: ... Rotary Club के प्रतिनिधि Guy Haora ने कहा :

"आज मुझे पता चला कि इस्लाम यह शिक्षा देता है कि जो बात कहो, उस पर स्वयं अमल भी करो। केवल बातें करना पर्याप्त नहीं है।

शेष ..

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ऑस्ट्रेलिया दौरा 2013

(भाग -4)

…लोगों को सफलता और सच्ची राहत की ओर बुलाया जा रहा है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

क़ुरआन करीम फ़रमाता है कि वास्तविक सफलता और मुक्ति केवल वही लोग प्राप्त करते हैं जो दूसरों को नेकी की ओर बुलाते हैं और बुराइयों से रोकते हैं। सही और ग़लत का अंतर बताते हुए अल्लाह तआला ने पूरी मानव जाति के अधिकारों और एक-दूसरे का ध्यान रखने पर बहुत अधिक ज़ोर दिया है। वास्तव में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि सच्ची शांति और संतोष केवल वही लोग पा सकते हैं जो दूसरों की ज़रूरतों को अपनी ज़रूरतों पर प्राथमिकता देते हैं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

इसलिए जिस भी दृष्टि से विचार किया जाए, यही सिद्ध होता है कि हक़ूक़ुल-इबाद (बंदों के अधिकार) और अल्लाह तआला की इबादत के बीच एक गहरा और सूक्ष्म संबंध है। दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह संबंध इतना मज़बूत है कि यदि इन्हें अलग कर दिया जाए, तो मनुष्य उस उद्देश्य को कभी पूरा नहीं कर सकता जिसके लिए अल्लाह तआला ने उसे पैदा किया है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

अहमदिया मुस्लिम जमाअत भी मानवता के प्रति सहानुभूति की भावना के कारण पूरी दुनिया में इंसानों की सेवा कर रही है। अहमदिया जमाअत धर्म, जाति और रंग से ऊपर उठकर दुनिया के अधिकांश भागों में मानव कल्याण और शिक्षा से जुड़े अनेक कार्य कर रही है। हमारे लिए क़ुरआन करीम की शिक्षाएँ ही सबसे बड़ी प्रेरणा और मार्गदर्शक हैं। इन शिक्षाओं को जमाअत-ए-अहमदिया के संस्थापक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस युग में स्पष्ट रूप से हमारे सामने रखा। हमने जो स्कूल, कॉलेज और अस्पताल बनाए हैं, उनका उद्देश्य भी यही है कि अल्लाह तआला हमारी इबादतों को स्वीकार करे।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

मैं केवल एक उदाहरण देता हूँ। अफ़्रीका के कई दूर-दराज़ क्षेत्रों और दुनिया के ग़रीब देशों में अहमदिया जमाअत लोगों को पीने का स्वच्छ पानी उपलब्ध करा रही है। हम यह कार्य केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए कर रहे हैं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

हमारे दिलों में मौजूद प्रेम और मानवता के प्रति सहानुभूति ही वह कारण है कि अहमदिया जमाअत हर स्तर पर दुनिया के नेताओं का ध्यान शांति और न्याय स्थापित करने की ओर आकर्षित कर रही है। हम ये प्रयास इसलिए कर रहे हैं क्योंकि हम मानव जाति को विनाश से बचाना चाहते हैं। इसी कारण हम न्याय की स्थापना पर ज़ोर देते हैं, क्योंकि न्याय ही स्थायी शांति का आधार है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

क़ुरआन करीम ने केवल न्याय का आदेश ही नहीं दिया, बल्कि न्याय के वे उच्च मानदंड भी बताए हैं जिनकी आवश्यकता है। क़ुरआन करीम फ़रमाता है कि किसी भी जाति या देश की दुश्मनी किसी व्यक्ति को न्याय और निष्पक्षता से न रोके। व्यक्तिगत लाभ या बदला लेने के लिए न्याय की उपेक्षा करना इस्लामी शिक्षाओं के बिल्कुल विरुद्ध है। इतिहास इस बात का गवाह है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक मुसलमान के विरुद्ध एक यहूदी के पक्ष में न्यायपूर्ण फ़ैसला दिया था। आपने ऐसा इसलिए किया क्योंकि आपका क़ुरआन का ज्ञान अनुपम था और जिस प्रकार आपने अल्लाह की इबादत का अधिकार अदा किया, उसका भी कोई उदाहरण नहीं मिलता।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

इसलिए मैं एक बार फिर कहूँगा कि जो इबादत करने वाले इस मस्जिद में प्रवेश करेंगे, वे केवल अल्लाह के सामने सिर झुकाने वाले ही नहीं होंगे, बल्कि अल्लाह की मख़्लूक़ के अधिकार भी अदा करने वाले होंगे। इस मस्जिद में आने वाले सभी लोग कानून का पालन करने वाले होंगे। इस मस्जिद में आने वाले सभी लोग इस देश से सच्चा और बिना किसी शर्त के प्रेम करने वाले होंगे और यह विश्वास रखेंगे कि अपने देश से प्रेम करना उनके ईमान का अनिवार्य हिस्सा है। इस मस्जिद में आने वाले लोग अपने पड़ोसियों को कष्ट या परेशानी पहुँचाने के बजाय उनके अधिकारों की रक्षा करने वाले होंगे।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

वास्तव में इस्लाम ने पड़ोसियों के अधिकारों पर इतना अधिक ज़ोर दिया है कि एक बार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला पड़ोसियों के अधिकारों के बारे में इतनी अधिक ताकीद कर रहा है कि मुझे लगा कहीं अल्लाह तआला उन्हें विरासत पाने वालों में शामिल न कर दे। इसलिए समाज में प्रेम और भाईचारा स्थापित करने के लिए हमें महान शिक्षाएँ दी गई हैं। इस मस्जिद में आने वाले लोग अल्लाह तआला और उसकी मख़्लूक़, दोनों के अधिकार अदा करने वाले होंगे। इस प्रकार यह मस्जिद केवल एक इबादतगाह ही नहीं कहलाएगी, बल्कि प्रेम, भाईचारे और मानव-सेवा की एक प्रमुख पहचान बनेगी।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

अंत में मैं संक्षेप में वर्तमान विश्व परिस्थितियों के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। मुझे आशा है और मेरी दुआ है कि इस देश के लोग, बल्कि वास्तव में पूरी दुनिया के लोग, अपने-अपने समाज में फैली अशांति और भय को समाप्त करने के लिए प्रयास करें। मेरी यह भी दुआ है कि सभी सरकारें न्याय का पूरा अधिकार अदा करें और शांति स्थापित करने वाली बनें। अन्यथा इसमें कोई संदेह नहीं कि दुनिया बहुत तेज़ी से एक बड़े विनाश की ओर बढ़ रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि एक भयानक विश्व युद्ध अब बहुत निकट आ चुका है। यदि हम इसे रोकने में असफल रहे, तो हमें उसके अत्यंत भयावह परिणामों का सामना करना पड़ेगा। पूरी संभावना है कि उस युद्ध में परमाणु हथियारों का प्रयोग होगा, जिसके कारण आने वाली कई दशकों तक रक्तपात और विनाश का दौर चलता रहेगा। यदि हमने इस आपदा को न रोका, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें कभी माफ़ नहीं करेंगी। दुनिया को इन भयावह परिस्थितियों से बचाने के लिए ऑस्ट्रेलिया की सरकार और वहाँ की जनता को अपनी-अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभानी होंगी और अपना-अपना योगदान देना होगा। अल्लाह तआला उन्हें ऐसा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

अंत में, मैं एक बार फिर अपने सभी अतिथियों का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने समय निकालकर इस मस्जिद के उद्घाटन समारोह में हमारे साथ भाग लिया।

अल्लाह तआला की रहमत आप सभी पर हो। आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह संबोधन 7 बजकर 35 मिनट तक जारी रहा। संबोधन के अंत में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

इसके बाद अतिथियों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई।

भोजन के बाद सभी अतिथियों को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कृपापूर्वक मंच से नीचे पधारे। अतिथि एक-एक करके हुज़ूर के पास आते, आपसे हाथ मिलाने का सम्मान प्राप्त करते। हुज़ूर प्रत्येक व्यक्ति से बातचीत करते और उनका परिचय प्राप्त करते। प्रत्येक अतिथि ने निवेदन करके हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिंचवाई और इसे अपने लिए सौभाग्य माना।

समारोह में शामिल अतिथियों की प्रतिक्रियाएँ

आज के इस समारोह में शामिल अतिथियों ने खुलकर कहा कि आज के इस कार्यक्रम में ख़लीफ़तुल मसीह का व्यक्तित्व और उनका संबोधन हम पर गहरा प्रभाव छोड़ गया है। हुज़ूर अनवर का पूरा भाषण सच्चाई पर आधारित था। आज हमें इस्लाम की सुंदर शिक्षाओं के बारे में जानकारी मिली।

: … Aunty Robyn, जो ऑस्ट्रेलिया के Aboriginal समुदाय से संबंध रखती हैं और अपने कबीले की एक सम्मानित बुज़ुर्ग महिला हैं, उन्होंने कहा कि आज इस समारोह में मुझे जो सम्मान दिया गया, उसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। हमारे Aboriginal समुदाय का झंडा भी लगाया गया। हमें इतना सम्मान पहले कभी किसी ने नहीं दिया।

वे हज़रत बेगम साहिबा मुद्दज़िल्लहाअल-आली से भी मिली थीं। जब उनसे मिलकर बाहर आईं तो उनकी आँखों में आँसू थे और वे बार-बार यही कह रही थीं कि आज आप सबने मुझे बहुत सम्मान दिया है।

संसद के कुछ सदस्यों और अन्य अतिथियों ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए … संसद सदस्य Michael Latter ने कहा:

"हुज़ूर अनवर का संबोधन सुनकर मैं भावुक हो गया। हुज़ूर ने कितना शानदार संदेश दिया है। मैं उनके भाषण से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। यह भाषण दिल से किया गया था। इसने इस मस्जिद के बारे में हर व्यक्ति की शंकाओं को दूर कर दिया है।

भाषण के दौरान मैंने विशेष रूप से गैर-मुस्लिम श्रोताओं के चेहरों को देखा और मुझे महसूस हुआ कि वे हुज़ूर अनवर के संदेश की पूरे उत्साह से सराहना कर रहे थे।

हुज़ूर अनवर निश्चय ही एक महान व्यक्तित्व हैं। वास्तव में मैं पूरे सप्ताह उनसे मिलने

शेष पृष्ठ 10 पर

Editor: Shaikh Mujahid Ahmad
Dy. Editor: Syed Mohiuddin Farid
Editor : +91-9915379255
akhbaarbadarhindiqdn@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 03 September 2026 Issue No. 36

Act. Manager
Athar Ahmad Shamim
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 600/- (Per Issue : Rs. 12/-) (WEIGHT: 20-50 gms/issue)

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{99} बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

मुझसे मियाँ अब्दुल्लाह साहब सनौरी ने बयान किया कि जब लुधियाना में पहली बार, अर्थात 1889 ई. में, बैअत ली गई, तो उसके बाद हज़रत साहब अलीगढ़ तशरीफ़ ले गए। मैं, मीर अब्बास अली और शेख हामिद अली भी साथ थे। हज़रत साहब, सैयद तफ़ज़्ज़ुल हुसैन साहब तहसीलदार के मकान पर ठहरे, जो उन दिनों ज़िला दफ़्तर में सुपरिंटेंडेंट थे।

वहाँ एक तहसीलदार, जो सैयद साहब का परिचित था, उसने हज़रत साहब को दावत दी और शहर के दूसरे सम्मानित लोगों को भी बुलाया। हज़रत वहाँ तशरीफ़ ले गए और अपनी आदत के अनुसार हम तीनों को अपने दाएँ-बाएँ बिठाया।

तहसीलदार साहब ने खाने के लिए छोटी-छोटी चौकियों (तख़्तपोशों) का इंतज़ाम किया था, जिन पर खाना रखा गया और लोग उनके चारों ओर बैठ गए। चौकियों पर काँच के गिलासों में फूलों के गुलदस्ते भी रखे हुए थे।

जब खाना शुरू हुआ तो मीर अब्बास अली ने खाने की ओर हाथ नहीं बढ़ाया, बल्कि चुपचाप बैठे रहे। हज़रत साहब ने उनसे पूछा, "मीर साहब! आप क्यों नहीं खाते?"

उन्होंने कहा, "यह नैचरियों के तरीके का खाना है।"

हज़रत साहब ने फ़रमाया, "नहीं, इसमें कोई हर्ज नहीं है। यह शरीअत के ख़िलाफ़ नहीं है।"

मीर साहब ने कहा, "मेरा तो दिल नहीं चाहता।"

हज़रत साहब ने फ़रमाया, "मीर साहब! हम तो खा रहे हैं।"

मीर साहब ने कहा, "हज़रत! आप खाइए, मैं तो नहीं खाता।"

इस प्रकार मीर अब्बास अली ने खाना नहीं खाया।

मियाँ अब्दुल्लाह साहब कहा करते थे कि जब अब्बास अली ने बाद में धर्म त्याग दिया (मुरतद हो गया), तब मुझे यह बात याद आई कि वास्तव में वह तो उसी समय से अलग हो चुका था।

इसके अलावा मियाँ अब्दुल्लाह साहब ने बयान किया कि अलीगढ़ में लोगों ने हज़रत साहब से निवेदन करके आपके एक व्याख्यान (लेक्चर) का प्रबंध किया था और हज़रत ने उसे स्वीकार भी कर लिया था। जब उसका विज्ञापन हो गया, सारी तैयारियाँ पूरी हो गईं और व्याख्यान का समय निकट आ गया, तब हज़रत साहब ने सैयद तफ़ज़्ज़ुल हुसैन साहब से फ़रमाया, "मुझे अल्लाह तआला की ओर से इल्हाम हुआ है कि मैं व्याख्यान न दूँ, इसलिए अब मैं व्याख्यान नहीं दूँगा।"

उन्होंने कहा, "हज़ूर! अब तो सारी तैयारी हो चुकी है। लोगों के बीच बहुत अपमान होगा।" हज़रत साहब ने फ़रमाया, "चाहे जो हो, हम अल्लाह के हुक्म के अनुसार ही काम करेंगे।"

फिर दूसरे लोगों ने भी बहुत आग्रह के साथ हज़रत साहब से निवेदन किया, लेकिन हज़रत नहीं माने और फ़रमाया, "यह कैसे हो सकता है कि मैं अल्लाह के हुक्म को छोड़ दूँ? उसके हुक्म के सामने मैं किसी अपमान की परवाह नहीं करता।"

इस प्रकार हज़रत साहब ने व्याख्यान नहीं दिया और लगभग सात दिन वहाँ ठहरकर वापस लुधियाना तशरीफ़ ले आए।

ख़ाकसार निवेदन करता है कि जब मियाँ अब्दुल्लाह साहब ने पहली बार यह रिवायत बयान की थी, तब उन्होंने कहा था कि यह यात्रा हज़रत साहब ने 1884 ई. में की थी। मैंने यह बात अपनी वालिदा साहिबा से कही तो उन्होंने इसका खंडन किया और कहा कि यह यात्रा मियाँ (अर्थात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय) के जन्म के बाद, बल्कि प्रारम्भिक बैअत के बाद हुई थी।

जब मैंने वालिदा साहिबा की यह रिवायत मियाँ अब्दुल्लाह साहब को सुनाई, तो पहले उन्होंने अपनी बात की सही होने पर ज़ोर दिया, लेकिन अंत में उन्हें याद आ गया कि वास्तव में यही बात सही है।

ख़ाकसार निवेदन करता है कि मियाँ अब्दुल्लाह साहब कहा करते थे कि अलीगढ़ की इस यात्रा से हज़रत साहब का वह उद्देश्य पूरा हुआ, जो आपने भारत की यात्रा के संबंध में बनाया था।

ख़ाकसार निवेदन करता है कि इसी यात्रा के दौरान मौलवी मुहम्मद इस्माईल अलीगढ़ी ने हज़ूर का विरोध किया और बाद में आपके विरुद्ध एक पुस्तक भी लिखी, लेकिन कुछ ही समय बाद इस संसार से चल बसे।

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक फ़त्ह-ए-इस्लाम के हाशिये में इस यात्रा का पूरा उल्लेख किया है।)

100} बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

मुझसे मियाँ अब्दुल्लाह साहब सनौरी ने बयान किया कि सम्भवतः यह 1884 ई. की बात है। एक बार जेठ के महीने (मई-जून) में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मस्जिद मुबारक में फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी। उसके बाद मस्जिद से लगे हुए गुस्लखाने में चले गए, जो नया प्लास्टर होने के कारण ठंडा रहता था। वहाँ एक चारपाई बिछी रहती थी, उसी पर आप लेट गए। चारपाई पर न बिस्तर था और न तकिया। हज़रत का सिर क़िब्ले की ओर और चेहरा उत्तर की ओर था। आपने एक कोहनी सिर के नीचे तकिए की तरह रख ली और दूसरी कोहनी सिर के ऊपर ढकने के लिए रख ली। मैं आपके पाँव दबाने बैठ गया।

वह रमज़ान का महीना था, सत्ताईसवीं तारीख थी और शुक्रवार का दिन था। इसलिए मैं मन ही मन बहुत प्रसन्न था कि मुझे इतने मुबारक अवसर एक साथ मिले हैं। अर्थात मैं हज़रत साहब जैसे मुबारक इंसान की सेवा कर रहा हूँ, फ़ज्र का समय है जो बहुत बरकत वाला समय है, रमज़ान का महीना है जो बरकत वाला महीना है, सत्ताईसवीं तारीख है, शुक्रवार का दिन है, और पिछली रात शब-ए-क़द्र थी। क्योंकि मैंने हज़रत साहब से सुना था कि जब रमज़ान की सत्ताईसवीं तारीख और शुक्रवार एक साथ आ जाएँ, तो वह रात निश्चित रूप से शब-ए-क़द्र होती है।

मैं इन्हीं बातों को सोचकर मन ही मन प्रसन्न हो रहा था कि अचानक हज़रत साहब का शरीर काँप उठा। उसके बाद आपने धीरे से अपने ऊपर रखी हुई कोहनी थोड़ी हटाकर मेरी ओर देखा। उस समय मैंने देखा कि हज़रत साहब की आँखों में आँसू भरे हुए थे। (1) फिर आपने उसी तरह अपनी कोहनी वापस रख ली।

जब मैं पाँव दबाते-दबाते आपकी पिंडली तक पहुँचा तो मैंने देखा कि आपके टखने के नीचे एक सख़्त-सी जगह (गाँठ जैसी) थी। उस पर लाल रंग की एक बूंद पड़ी हुई थी, जो अभी-अभी गिरने के कारण ताज़ा थी। मैंने उसे अपने दाएँ हाथ की तर्जनी उँगली से छूकर देखा कि यह क्या है। इससे वह बूंद टखने पर भी फैल गई और मेरी उँगली पर भी लग गई। फिर मैंने उसे सूँघा कि शायद उसमें कोई खुशबू हो, लेकिन उसमें कोई खुशबू नहीं थी।

मैंने उसे इसलिए सूँघा था कि उसी समय मेरे मन में यह विचार आया था कि यह अल्लाह तआला की ओर से कोई बात है, इसलिए इसमें शायद कोई खुशबू होगी।

फिर मैं दबाते-दबाते पसलियों के पास पहुँचा। वहाँ मैंने उसी लाल रंग की एक और बड़ी बूंद कुर्ते पर देखी। मैंने उसे भी छूकर देखा तो वह भी गीली थी। (2) उस समय मुझे फिर आश्चर्य हुआ कि यह लाल रंग कहाँ से आ गया।

फिर मैं धीरे से चारपाई से उठ गया, ताकि हज़रत साहब की नींद न खुल जाए। उसके बाद मैंने यह पता लगाने की कोशिश की कि यह लाल रंग कहाँ से गिरा है। कमरा बहुत छोटा था। मैंने छत को चारों ओर से अच्छी तरह देखा, लेकिन बाहर कहीं भी इसका कोई निशान नहीं मिला कि यह कहाँ से गिरा है।

मेरे मन में यह भी विचार आया कि कहीं छत पर किसी छिपकली की पूँछ कट गई हो और उसका खून गिरा हो। इसलिए मैंने ध्यान से पूरी छत देखी, लेकिन उसका भी कोई निशान नहीं मिला।

आख़िरकार मैं थककर बैठ गया और पहले की तरह फिर पाँव दबाने लगा।

कुछ देर बाद हज़रत साहब उठकर बैठ गए। फिर कमरे से निकलकर मस्जिद में जाकर बैठ गए। मैं भी पीछे बैठकर आपके कंधे दबाने लगा।

उस समय मैंने निवेदन किया, "हज़ूर! यह लाल रंग आप पर कहाँ से गिरा है?"

हज़रत ने बहुत सामान्य ढंग से फ़रमाया, "शायद आम का रस होगा।" और बात को टाल दिया। मैंने फिर अर्ज़ किया, "हज़ूर! यह आम का रस नहीं है, यह तो लाल रंग है।"

इस पर आपने अपना मुबारक सिर थोड़ा हिलाकर फ़रमाया, "कित्थे है?" अर्थात "कहाँ है?"

मैंने कुर्ते पर वह निशान दिखाकर कहा, "यह रहा।" इस पर हज़रत ने कुर्ते को सामने की ओर खींचा, अपना सिर उधर करके उस बूंद को देखा। फिर उसके बारे में मुझसे कुछ नहीं कहा। बल्कि अल्लाह तआला के दर्शन (रूयत-ए-बारी) और आध्यात्मिक अनुभवों (कश्फ़) के बाहरी रूप में प्रकट होने के संबंध में पहले के बुज़ुर्गों के दो-एक घटनाएँ सुनाईं और फ़रमाया: "अल्लाह तआला का अस्तित्व हर चीज़ से परे है। संसार में इन आँखों से उसे नहीं देखा जा सकता। हाँ, उसकी कुछ जमाली (कृपा और सौंदर्य वाली) या जलाली (महिमा और शक्ति वाली) विशेषताएँ रूप धारण करके बुज़ुर्गों को दिखाई दे

शेष पृष्ठ 8 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad